❖ वर्ष 49 ❖ अंक 11 ❖ नवम्बर 2022

₹ 15/-

हँसती दुनिया

दीपावली की शुभकामनाएं

हँसती दुनिया

● वर्ष 49 ● अंक 11 ● नवम्बर 2022 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
12. चित्रकथा
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
46. क्या आप जानते हैं?
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया

कविताएं

7. प्रार्थना
: संजय कुमार चतुर्वेदी

7. मीठे दो बोल
: राजेश अरोड़ा

17. दीपों की ज्योति लिए
: हरजीत निषाद

17. जलते दीपक
: राजकुमार जैन 'राजन'

24. सीख
: डॉ. नरेन्द्रनाथ लाहा

24. मिलती मंजिल
: महेन्द्र सिंह शेखावत

31. श्रम का फल
: मीरा सिंह 'मीरा'

31. पुस्तक
: दिनेश दर्पण

47. हो जब संकल्प महान
: अखिलेश आर्येन्दु

विशेष/लेख

16. एक अनोखा जंगल
: राजकुमार जैन

20. पहेलियां
: डॉ. कमलेन्द्र कुमार

25. क्या है एक्स-रे?
: डॉ. विनोद गुप्ता

28. कभी देखा है ऐसा पेड़!
: मिताली जैन

42. समुद्री घोड़ा
: परशुराम शुक्ल

50. मेढक तरह-तरह के
: विभा वर्मा

कहानियां

8. अभिषेक की दीवाली
: सेवा नन्दवाल

18. तीन बातें
: राजेश चौधरी

21. फैसला
: दर्शन सिंह आशट

27. मंत्री का चुनाव
: विभा वर्मा

32. एक शरारत से
: दिनेश प्रतापसिंह

39. मेहनत का सुख
: परिधि जैन

सबसे पहले

मौन

एक दिन प्रिंसिपल महोदय अपने विद्यालय की एक कक्षा में जा पहुँचे। सभी विद्यार्थी एक साथ खड़े हुए और प्रिंसिपल महोदय का अभिवादन किया। वहाँ उन्होंने एक बात कही– 'मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ, जिसका उत्तर आप सभी को अपनी कापी पर लिखकर दो मिनट के अन्दर देना है। प्रश्न यह था कि वह कौनसी चीज है जो बहुत तीखी व तेज है और वह विनाश का कारण बन जाती है।'

प्रश्न सुनकर सभी विद्यार्थियों ने उत्तर लिखना शुरू कर दिया और दो मिनट के अन्दर ही सबने अपनी कापी प्रिंसिपल महोदय को दे दी। उस कक्षा में एक साधारण विद्यार्थी भी था जिसने उत्तर देने में कुछ अधिक समय ले लिया। प्रिंसिपल महोदय ने सबके उत्तर लेकर अपने पास रख लिये। अगले दिन फिर प्रिंसिपल महोदय कक्षा में आए और उन्होंने कहा– 'सभी विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी बुद्धि, ज्ञान और अनुभव से उत्तर दिए। किसी ने चाकू को तीखा बताया, किसी ने तलवार, तीर, बम्ब और किसी-किसी ने मिसाइल, एटमबम्ब तक को बताया। कुछ ने तो यह भी लिखा कि आजकल चलचित्र, इन्टरनेट, मोबाइल, सोशल मीडिया ने भी घरों में एक-दूसरे से दूरी बढ़ा दी है और ये चीजें वरदान तो हैं लेकिन अभिशाप भी बन चुकी हैं।

कुछ क्षण चुप रहने के पश्चात् उन्होंने एक उत्तर का उल्लेख किया। जिसमें लिखा था– तीखे, तेज और विनाश का कारण चुप रहना या मौन रहना है। फिर प्रिंसिपल महोदय ने उस विद्यार्थी का नाम पुकारा और उसको अपने पास बुलाकर उससे पूछा कि हमें बताए कि आपने ऐसा क्यों लिखा? वह विद्यार्थी वही था जिसे अन्य विद्यार्थी मन्दबुद्धि कहते रहते थे।

उस विद्यार्थी ने कहा, 'सर! मैं अपने अनुभव से कह रहा हूँ कि चुप रहना, बहुत ही शक्तिशाली, तेज और विध्वंसक हथियार है। जब-जब मेरे सहपाठी मुझे तंग करते हैं, मन्दबुद्धि कहते हैं और उपहास करते हैं तो उस समय मैं एकदम चुप हो जाता हूँ और अपने विचारों पर किसी की बात को हावी नहीं होने देता। पहले मुझे क्रोध भी आता था, मार-पीट का भी दिल करता था। परन्तु जब से मैंने अपने विचारों में किसी के प्रति कोई विकार नहीं रखा तो मैं अपने-आप चुप रहने लगा और यही अभ्यास मेरा शक्तिशाली हथियार बन गया। इस हथियार से सबसे पहले मैंने अपने क्रोध का विनाश किया। अगर मैं क्रोध करता तो मेरे सहपाठी और अधिक क्रोधित होते परन्तु उनको क्रोध आने पहले ही उन्हें शांत भी कर दिया। क्रोध कम होने से मेरी बुद्धि में भी विकास होने लगा। क्रोध से अधिक तेज अग्नि भी नहीं। व्यक्ति एक बार क्रोध में आपे से बाहर हो जाता है तो उसे शान्त नहीं किया जा सकता और वह पहले अपना नाश करता है और फिर दूसरों की बारी आती है।' यह कहकर वह चुप हो गया।

प्यारे साथियों! चुप रहना, मौन रहना एक तरह से शक्तिशाली हथियार है। इसका उपयोग हमें बड़ी बुद्धिमत्ता से करना चाहिए। हमें दूसरों की बातों का इतना असर ग्रहण नहीं करना चाहिए और न ही उन गलत बातों का मनन करना चाहिए। इससे हमारी अपनी क्रियाशीलता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जो बाद में क्रोध, ईर्ष्या का कारण है। परन्तु चुप रहना हथियार भी है और कमजोरी भी। अगर सही समझ और सोच के साथ, सही समय पर इसका प्रयोग किया जाए तो यह इन्सान को सफल बना देता है, अन्यथा उसके परिणाम उल्टे भी हो जाते हैं।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 264

जिसनूं इस दा होए सहारा कम नहीं उसदा अड़ सकदा।
आध बेआध उपाध चों कोई रोग नहीं साहवें खड़ सकदा।
कारज उसदे रास करन लई आ के विच खलो जांदा ए।
पल विच अपणे भगत दे आपे सारे धोणे धो जांदा ए।
जिस दा जग विच कोई न होवे उसदा मददगार है एह।
कहे अवतार जो अंग संग वसदा साथी बस निरंकार है एह।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि जिसको इस प्रभु-निरंकार का सहारा हो, उसका कोई काम रुक नहीं सकता। वह इस प्रभु का सहारा लेकर कार्य आरम्भ करता है और इसकी कृपा से उसमें पूरी तरह सफल होता है। लोग तरह-तरह की पीड़ा से ग्रस्त हैं। तीन प्रकार के रोग माने गए हैं। संसार में कोई जन्म से विकारग्रस्त है तो किसी को जन्म के बाद अनेकों रोग घेर लेते हैं। मैं कुछ विशेष हूँ, इस बात का अहंकार भी इन्सान को परेशान करता है। गुरु की कृपा से भक्त के सामने तीनों रोग खड़े भी नहीं हो सकते। उसे मन और शरीर की पीड़ा परेशान नहीं कर सकती। शरण में आए सन्तों-भक्तों के बिगड़े काम बनाने के लिए ये प्रभु स्वयं आकर उनके बीच खड़ा हो जाता है। उनकी हर प्रकार से लाज रखता है और किसी भी स्थिति में उसको गिरने नहीं देता। यह इस निरंकार-प्रभु की दयालुता ही है जो यह भक्तों का कोई काम बिगड़ने नहीं देता। इसकी कृपा से भक्तों के सभी कार्य सहज में ही संवर जाते हैं।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि यह निरंकार-प्रभु तुम से दूर नहीं है। यह तुम्हारे अंग-संग है। तुम्हारे अत्यन्त निकट है। इसलिए इसे तुम्हारी मदद के लिए आने में कोई विलम्ब नहीं होता। भक्त हमेशा यही कहता है कि कार्य को करने वाला वह स्वयं नहीं बल्कि यह प्रभु-परमात्मा है। यही कर्ता है और अदृश्य रहकर यही सब कुछ कर रहा है। संसार के अन्य सहारे झूठे और समय पर काम न आने वाले हैं परन्तु इस प्रभु का सहारा पल प्रतिपल का सहारा है। सदैव काल का सहारा है।

संसार में लोग सबल का सहारा बनते हैं। निर्बल का सहारा तो यह प्रभु ही बनता है। संसार में जिसका कोई मददगार न हो उसकी मदद करने वाला भी यही है। इस प्रभु की करुणा ऐसी है कि यह पल में आकर भक्तों के सारे धोने धो जाता है अर्थात् उनके सारे कष्ट दूर कर देता है। उनके कठिन से कठिन कार्य निपटा जाता है, बिगड़े कार्य संवार जाता है।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि संसार की सभी दुख-पीड़ाओं से बचने और अपने हर कार्य को सफल करने के लिए संसार के झूठे सहारों को त्याग कर इस अंग-संग रहने वाले हरि अविनाशी का ही सहारा लेना है।

भावार्थ : हरजीत निषाद

अनमोल वचन

❖ परमात्मा का अंश आत्मा हर एक में है। यह सच्चाई समझ आते ही सारे भेदभाव खत्म हो जाते हैं। जब हम इन्सान के रूप में आए हैं तो लोगों के लिए दुख और परेशानियों का कारण न बनें बल्कि सबके आंसू पोंछने वाले बनें।

❖ निरंकार का स्मरण करते हुए भक्ति मजबूत करें। परस्पर आपसी प्यार और सहयोग बढ़ता जाए।

❖ निरंकार के अहसास से विपरीत सोच और परायेपन की भावना मिट जाती है।

❖ सेवा, सुमिरण, सत्संग और विश्वास भक्ति महल के चार स्तम्भ हैं।

❖ अगर हम परमात्मा को अपने मन में रखेंगे तो घर का माहौल सुन्दर बनेगा। मन में करुणा, दया, विशालता वाले गुणों को अपनाएंगे तो जीवन सरल हो जायेगा।

– सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

❖ पेड़ खुद पूरे दिन धूप में खड़ा रहता है लेकिन आने-जाने वाले इन्सान को छाया देता है, ठंडक देता है। इसी प्रकार महापुरुष आप चाहे कष्ट सहते रहें लेकिन दूसरे को सुख देते हैं।

❖ नकारात्मक प्रभावों से बचे रहने का एकमात्र उपाय है– सत्संग। जिस प्रकार जमीन में कील को मजबूती देने के लिए उस पर हथोड़े से बार-बार चोट की जाती है उसी प्रकार ज्ञान पर मजबूती के लिए सत्संग की निरन्तर आवश्यकता है।

❖ जीवन की नैया में हम अगर अभिमान के पत्थर भरते गये तो डूबने से कोई नहीं बचा पायेगा। **– बाबा हरदेव सिंह जी**

❖ सिर्फ अच्छा सोच लेना ही काफी नहीं है, हमारा व्यवहार, हमारे बोल, हमारे कर्म भी अच्छे होने चाहिए।

❖ अक्सर हम अपनी बड़ी से बड़ी गलतियां भी नजरअंदाज कर देते हैं। अगर हमने गलतियां नजरअंदाज करनी हैं तो दूसरों की करें और अपनी गलतियों को सुधारें।

❖ प्रेम और सहनशीलता के साथ जीवन जियें।

– माता सविन्दर हरदेव जी

❖ सोच-समझकर व्यवहार करो। न किसी को धोखा दो, न किसी से धोखा खाओ।

❖ जिसने मान का मान छोड़ दिया, जिसने पूर्ण सत्गुरु की आज्ञा का पालन किया, जिसने सत्गुरु के वचनों को माना, उसने गुरु को रिझा लिया। **– बाबा अवतार सिंह जी**

❖ ब्रह्मज्ञानी निरंकार की रजा में रहते हैं, प्रभु इच्छा को शुभ मानते हैं और हर हाल में खुशी महसूस करते हैं।

– बाबा गुरबचन सिंह जी

बाल कविता : संजय कुमार चतुर्वेदी

प्रार्थना

प्रभु जी सुन लो मेरी विनती,
याद हो जाये सारी गिनती।

अक्षर सब हो जायें याद,
समय न मेरा हो बरबाद।

अच्छे काम करूँ मैं जग में,
यश फैले सारे ही नभ में।

मात-पिता, गुरु का सम्मान,
सारे जग में हो गुणगान।

करूँ देश का ऊँचा नाम,
जीवन में मैं बनूं महान।

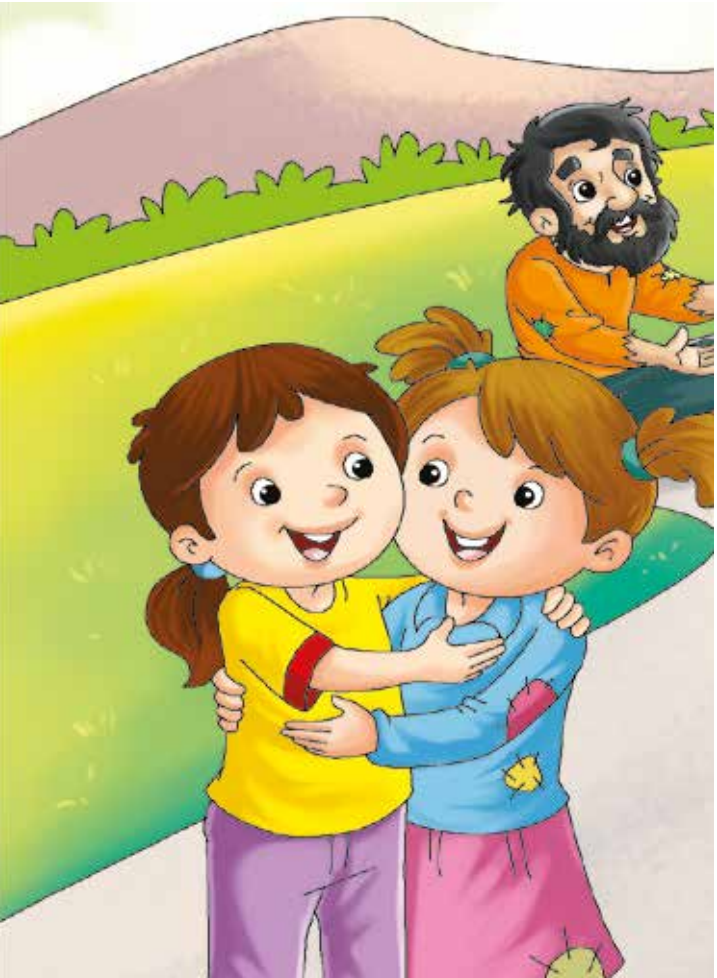

कविता : राजेश अरोड़ा

मीठे दो बोल

खुशियों के तुम फूल बांटकर,
जग की बगिया को महकाओ।
जिनकी आँखों में आंसू हों,
उनको भइया गले लगाओ।।

सुख बांटो, दुःख बांटो सबके,
बांटो प्रेम और प्रीत को।
सबके मन तुम जीत लो भाई,
गाओ प्यार के गीत को।।

सूरज, चाँद, सितारे बनकर,
जग का तम मिटाए रखना।
दीन-दुखियों के आंगन में भी,
खुशियों के दीप जलाए रखना।।

पर हित कर जो जीता जग में,
वह महान कहलाता है।
बनकर सबकी आँख का तारा,
आदर सबसे पाता है।।

कहानी : सेवा नन्दवाल

अभिषेक की दीवाली

दीवाली की छुट्टियों के बाद विद्यालय पुनः प्रारम्भ हुए तो सारे विद्यार्थीगण प्रसन्नचित लगे। दीवाली की खुशी उनके चेहरे पर बिखरी हुई थी। उनकी बातचीत का एक ही विषय था– दीवाली। किसने कितनी आतिशबाजी की, कितनी मिठाई खाई, कितने नये कपड़े बनवाए। कौन-सी चीज खरीदी, घर की सजावट किस तरह से की आदि-आदि?

कक्षा अध्यापक आनन्द सर के दाखिल होते ही नवीं कक्षा के सारे विद्यार्थियों ने खड़े होकर उनका अभिनन्दन किया। आनन्द सर के हाथों में एक छोटा-सा पैकेट था। उसे दिखाते हुए वे पूछने लगे– बच्चों! बता सकते हो इसके अन्दर क्या होगा?

विद्यार्थी अनुमान लगाने लगे। आनन्द सर मुस्कुराते हुए बोले– जो भी हो लेकिन यह तोहफा उसी को मिलेगा जो हमारे सवाल का उचित जवाब देगा।

विद्यार्थीगण सवाल जानने को उत्सुक हो उठे। सवाल बताइए सर।– रौनक ने पूछ लिया।

आनन्द सर मुस्कुरा पड़े– तुम्हें यह बताना है कि तुमने दीवाली कैसे मनाई?

यह तो बड़ा आसान सवाल है सर।– जयश्री ने मुस्कुराते हुए कहा।

ब्रजेश तत्परता से बोल पड़ा– सर, मैं इसका उत्तर बताऊँ।

–उत्तर तो सभी को बताना है क्योंकि दीवाली सभी ने मनाई होगी। लेकिन इस तरह मौखिक रूप से नहीं बल्कि लिखकर और वह भी कम शब्दों में तथा इसी पीरियड के अन्दर।– आनन्द सर ने बताया।

सारे विद्यार्थीगण सिर झुकाकर उत्तर लिखने में व्यस्त हो गए। जैसे ही पीरियड खत्म होने की घंटी बजी आनन्द सर ने पेपर इकट्ठे कर लिए।

गायत्री ने पूछ लिया– सर, इसका परिणाम कब बताएंगे?

–मध्यांतर के बाद मेरा एक पीरियड और है, परिणाम और पुरस्कार उसी में।– आनन्द सर ने कहा और कक्षा से बाहर निकल गये।

–मध्यांतर के बाद के पीरियड में आनन्द सर जब कक्षा में आए तो बच्चों में परिणाम जानने की व्यग्रता थी।

रूपाली ने कहा– सर, परिणाम बताइए।

–पुरस्कार किसे मिल रहा है?– गगन ने पूछ लिया।

–यह पुरस्कार उसे मिलेगा जिसने दीवाली सबसे अच्छी तरह से मनाई होगी यानि दीवाली के त्योहार को सार्थक किया होगा।– आनन्द सर मुस्कुराते हुए बोले।

–कौन विजेता है सर बताइए न?– पिंकी ने आग्रहपूर्वक पूछा।

–देखो भाई यह तो अभी हमने निश्चित नहीं किया। ऐसा करते हैं पहले तीन अच्छे उत्तर पढ़ते हैं फिर देखते हैं उनमें से किसका अच्छा उत्तर है? इसलिए सब बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे।– आनन्द सर ने कहा।

सारे बच्चे शान्तचित होकर बैठ गए।

–पहला उत्तर सुनिए– आनन्द सर ने पेपर हाथ में उठाते हुए कहा।

–किसका है सर?– ब्रजेश ने पूछा।

–नहीं अभी नाम किसी का नहीं बताएंगे।– पहला उत्तर इस तरह है– ''मेरे पापा ने मुझे तीन सौ रुपये के पटाखे खरीदकर दिए थे। मैंने उन पटाखों को अकेले नहीं जलाया और न ही अपने दोस्तों को दिए क्योंकि उनके पास पहले ही बहुत सारे पटाखे थे। मैंने आधे पटाखे झोपड़पट्टी में रहने वाले गरीब बच्चों में बांट दिये। मैं चाहता था कि इस पावन पर्व पर दूसरों को खुशियां बांट सकूं।'' इतना कहकर आनन्द सर चुप हो गए। फिर उन्होंने दूसरा पेपर हाथ में उठाया।

–दूसरा उत्तर इस प्रकार है कि– ''मेरे पापा दो सौ रुपये के पटाखे दिलाने वाले थे। मैंने सिर्फ

पचास रुपये के पटाखे अपने लिए खरीदे। बाकी के डेढ़ सौ रुपये को उन तीन घरों में जाकर पचास-पचास रुपये दे दिये जिनके पास दीये जलाने तक को पैसे नहीं थे और जिनके बच्चे ललचायी आँखों से इधर-उधर ताक रहे थे।'' दूसरा पेपर पढ़कर एक पल के लिए आनन्द सर खामोश हो गए। सारे विद्यार्थियों पर एक नजर फिसलाते हुए उन्होंने अंतिम पेपर उठाया।

–तीसरा उत्तर इस तरह से है– ''हमारे घर जो बाई काम करने आती है उसका लड़का भी कभी-कभी साथ आया करता था और अपनी माँ

का हाथ बंटाया करता था। मैंने सोचा कुछ पैसे देकर उनके घर दीप जला दूँ। फिर मैंने सोचा यह तो क्षणिक सहायता होगी। इससे उन्हें थोड़ी दूर की खुशी हासिल होगी और वे अपनी वर्तमान स्थिति से उबर नहीं पाएंगे। इसलिए मैंने सोचा क्यों न उनके घर का ज्ञान का दीपक जलाऊँ। इसलिए मैंने उस लड़के को पढ़ाना शुरू कर दिया। अपने दीवाली के पैसों से मैंने उसके लिए पुस्तकें, कापी, पैंसिल लाकर दी। इस तरह मैंने दीवाली का त्योहार मनाया।''

सारे बच्चे चुपचाप सुन रहे थे। आनन्द सर ने उनकी एकाग्रता भंग करके उनसे पूछा– ''तुमने तीनों उत्तर सुने। अब बताओ इनमें से किस बच्चे ने सबसे अच्छी दीवाली मनाई?'' विद्यार्थीगण यहाँ-वहाँ देखने लगे।

एक विद्यार्थी धीरे से फुसफुसाया– तीसरे ने।

फिर सारे विद्यार्थी एक साथ बोल पड़े– तीसरे विद्यार्थी ने सर।

आनन्द सर मुस्कुराए– ''हाँ बिल्कुल ठीक कहा। इस तीसरे विद्यार्थी ने दीवाली को सार्थक कर दिया। इसलिए पुरस्कार का हकदार वही है।''

यहाँ-वहाँ देखते हुए अनुराग ने पूछ लिया– कौन है सर वह?

–वह है अभिषेक।

–चलो अभिषेक इधर आओ और पुरस्कार हासिल करो।– आनन्द सर ने कहा।

–सकुचाता हुआ अभिषेक उठ खड़ा हुआ। सारे बच्चों ने तालियां बजाकर उसका उत्साहवर्धन किया।

–शाबाश बेटे, यह लो।– अभिषेक की पीठ थपथपाते हुए आनन्द सर ने वह पैकेट उसके हाथ में थमा दिया।

माया ने पूछ लिया– इसमें क्या है सर?

आनन्द सर ने मुस्कुराते हुए कहा– इसमें ज्ञान का दीपक जलाने का हथियार है। नहीं समझे? इसमें एक पेन है।

अभिषेक ने झुककर आनन्द सर के पैर छू लिये। विद्यार्थियों ने एक बार फिर जोरदार तालियां बजाकर अभिषेक का अभिनन्दन कर दिया।

❖

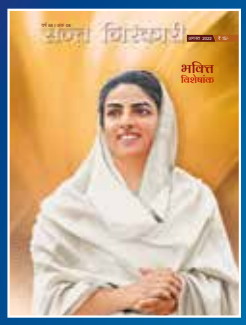

सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सत्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी | पंजाबी | अंग्रेजी | मराठी | नेपाली | गुजराती | बांग्ला | तमिल | तेलुगू | कन्नड | ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

एक नज़र

स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

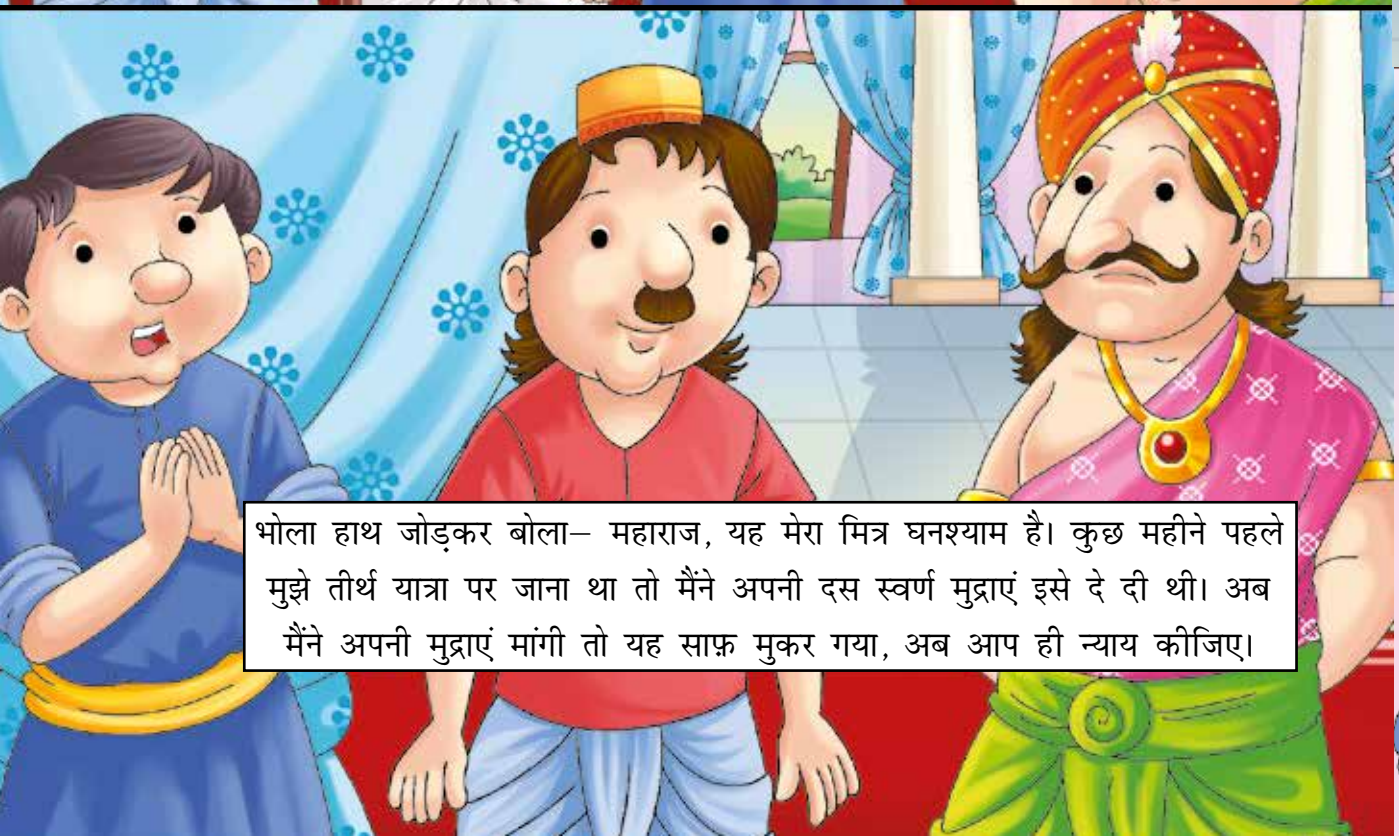

राजा ने घनश्याम से पूछा तो वह साफ़ मुकर गया।
राजा सोच में पड़ गया कि आखिर दोनों में से सच्चा कौन है और झूठा कौन? अतः उन्होंने तेनारीलाम को सच-झूठ का निर्णय करने के लिए कहा।
तेनालीराम भोला से बोले– हाँ, तो भाई भोला, अब तुमने मुद्राएं घनश्याम को दीं तो वहाँ कोई तीसरा भी था?

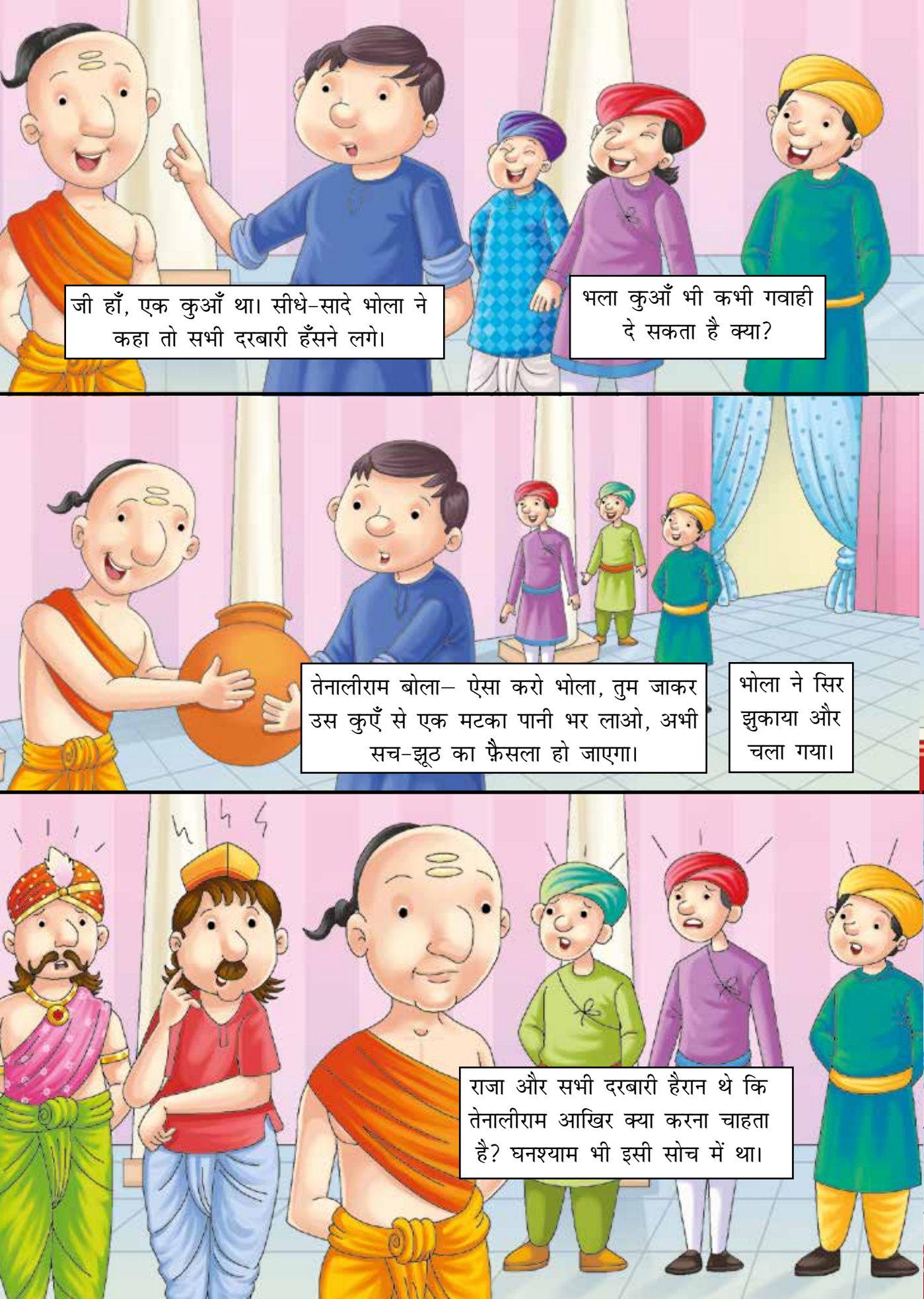
जी हाँ, एक कुआँ था। सीधे-सादे भोला ने कहा तो सभी दरबारी हँसने लगे।
भला कुआँ भी कभी गवाही दे सकता है क्या?
तेनालीराम बोला– ऐसा करो भोला, तुम जाकर उस कुएँ से एक मटका पानी भर लाओ, अभी सच-झूठ का फ़ैसला हो जाएगा।
भोला ने सिर झुकाया और चला गया।
राजा और सभी दरबारी हैरान थे कि तेनालीराम आखिर क्या करना चाहता है? घनश्याम भी इसी सोच में था।

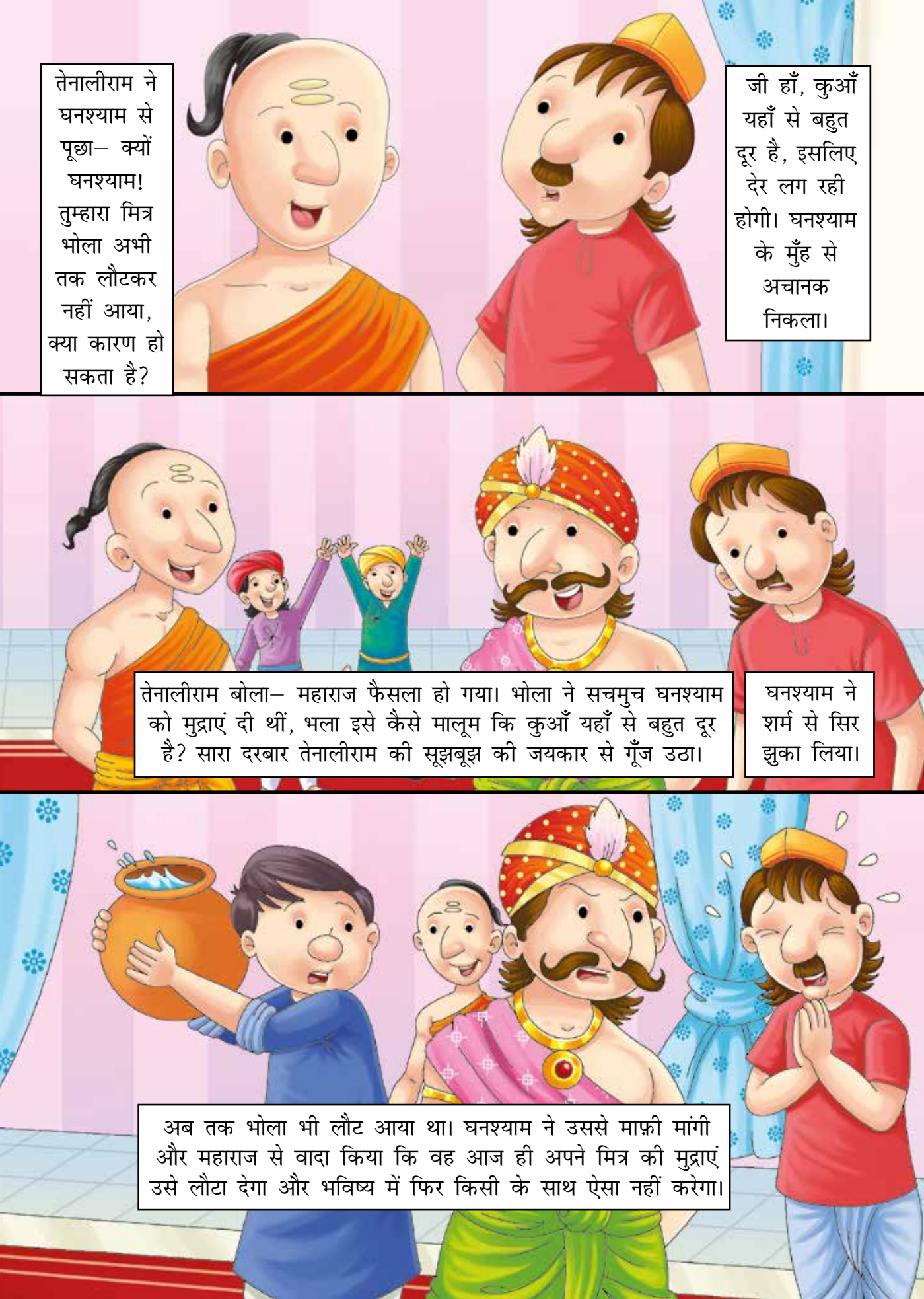
तेनालीराम ने घनश्याम से पूछा– क्यों घनश्याम! तुम्हारा मित्र भोला अभी तक लौटकर नहीं आया, क्या कारण हो सकता है?
जी हाँ, कुआँ यहाँ से बहुत दूर है, इसलिए देर लग रही होगी। घनश्याम के मुँह से अचानक निकला।
तेनालीराम बोला– महाराज फैसला हो गया। भोला ने सचमुच घनश्याम को मुद्राएं दी थीं, भला इसे कैसे मालूम कि कुआँ यहाँ से बहुत दूर है? सारा दरबार तेनालीराम की सूझबूझ की जयकार से गूँज उठा।
घनश्याम ने शर्म से सिर झुका लिया।
अब तक भोला भी लौट आया था। घनश्याम ने उससे माफ़ी मांगी और महाराज से वादा किया कि वह आज ही अपने मित्र की मुद्राएं उसे लौटा देगा और भविष्य में फिर किसी के साथ ऐसा नहीं करेगा।

जानकारीपूर्ण लेख : राजकुमार जैन

एक अनोखा जंगल

सेल्वा अमेजन नदी की घाटी में स्थित एक जंगल है। सेल्वा दुनिया के सबसे अधिक सघन जंगलों में है। सालभर यहाँ का तापमान बहुत ज्यादा रहता है। यहाँ की जलवायु निरक्षीय या मध्यवृत्तीय है। लगभग रोजाना यहाँ पर बरसात होती है। प्रतिदिन सायं तीन से चार बजे तक वज्रपात होता रहता है, आँधी तूफान आता है और मूसलाधार बरसात होती है। औसतन यहाँ पर हर वर्ष 100 से 200 बार इस तरह के आँधी तूफान आते हैं। अमेजन नदी की घाटी के भीतरी हिस्सों में सालभर में, 160 सेंटीमीटर और अमेजन नदी के मुहाने पर स्थित वेलेम में करीब 220 से.मी. बरसात होती है।

सेल्वा में मौसम कभी नहीं बदलता। सदैव ही गर्मी का मौसम रहता है। चूंकि यहाँ की हवा में पानी की नमी काफी मात्रा में मिली होती है। इसलिए हमेशा वाष्प के रूप में विद्यमान रहती है।

सेल्वा के वन इतने सघन हैं कि यहाँ सूरज की किरणें तक प्रवेश नहीं कर पातीं। नतीजन सूर्य-प्रकाश पाने के वास्ते यहाँ के पेड़ लम्बे होते चले जाते हैं। कोई-कोई वृक्ष तो 520 फीट तक ऊँचे पाए जाते हैं। जंगल के निचले हिस्से में हमेशा घना अंधेरा छाया रहता है और वहाँ सालभर सीलन बनी रहती है। यहाँ रोशनी के अभाव में झाड़-झंखाड़ तो नहीं उग पाते लेकिन वृक्षों की ऊपरी डालों पर बहुत सी लताएं जरूर फलती-फूलती रहती हैं।

सेल्वा के जंगलों के वृक्षों के पत्ते काफी चौड़े और बड़े आकार के होते हैं और अधिकतर पेड़ों की लकड़ी बेहद सख्त और मजबूत होती है। महोगनी, रोजवुड, आयरनवुड, सिंकोना, रबर आदि वृक्ष यहाँ बहुतायत से पाये जाते हैं। सेल्वा के जंगलों में पाये जाने वृक्षों की लकड़ी बहुत उम्दा और बेशकीमती है परन्तु इन्हें काटकर यहाँ से अन्यत्र ले जाना इतना अधिक जटिल और दुष्कर कार्य है कि इसमें होने वाले व्यय के कारण बहुत ही महंगा पड़ता है। दरअसल सेल्वा का जंगल अत्यधिक सघन और सीलन भरा है। यहाँ के वृक्षों को काटकर मार्ग तैयार कर पाना सचमुच टेढ़ी खीर है।

यहाँ के जंगलों में जीव-जन्तु प्रचार मात्रा में हैं परन्तु अधिकांश जीव-जन्तु सरीसृप जाति के हैं तथा पेड़ों पर रहते हैं। विभिन्न प्रकार के कीड़े-मकोड़े, मच्छर, तितलियां, चमगादड़, सांप, छछून्दर, मेढक, उड़ने वाली गिलहरी और विभिन्न प्रकार के बन्दर यहाँ बहुतायत से दिखाई पड़ते हैं।

इस जंगल में सैंकड़ों किस्म की दुर्लभ जड़ी-बूटियां हैं।

बाल कविता : हरजीत निषाद

दीपों की ज्योति लिए

श्रद्धा की थाली में प्रेम की मिठाई।
दीपों की ज्योति लिए दिवाली आई।

मिलवर्तन की रोली नम्रता के चावल,
सद्भावों के दीप अपनत्व कोमल।
ज्ञान का उजाला लिए दिवाली आई,
दीपों की ज्योति लिए दिवाली आई।।

मिट्टी के दीपक में जीवन की बाती,
नम्रता के वस्त्रों पर भक्ति सुहाती।
खुशियों के रंग लिए दिवाली आई,
दीपों की ज्योति लिए दिवाली आई।।

दीप की अंधेरे पर जीत हो हमेशा,
बुराई मिटे सभी यत्न करें ऐसा।
रौनक खुशहाली लिए दिवाली आई,
दीपों की ज्योति लिए दिवाली आई।।

बाल कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

जलते दीपक

तूफानों में जलते दीपक,
आंधी में भी पलते दीपक।
देखे गंगा की लहरों पर,
पानी में हैं चलते दीपक।।

कभी कांपते, कभी चमकते,
अंधियारों को छलते दीपक।
संग पतंग के, कभी हवा में,
रहते हिलते-डुलते दीपक।।

आगत के स्वागत में हरदम,
देहरी पर मुस्काते दीपक।
घर-घर में उजियारा करने,
मिट्टी में हैं ढलते दीपक।।

कहानी : राजेश चौधरी

तीन बातें

किसी गाँव में एक शिकारी रहता था। वह प्रतिदिन जंगल में जाता और पक्षियों को पकड़ता। एक दिन शिकारी जंगल में बहुत देर तक भटकता रहा पर उसे कोई पक्षी नहीं मिला। वह निराश मन से गाँव की तरफ लौटने लगा।

कुछ चलने पर शिकारी सोचने लगा कि आज तो लगता है कि पूरा दिन बेकार हो जाएगा। अभी तक कोई शिकार नहीं मिला। जाने आज क्या होगा। वह थकान मिटाने के लिए एक पेड़ के नीचे पैर पसारकर लेट गया।

अभी वह लेटा ही था कि उसकी नजर पेड़ पर बैठी एक सुन्दर चिड़िया पर पड़ी। शिकारी ने बिना वक्त गवाएं चिड़िया पर जाल फेंककर उसे पकड़ लिया।

चिड़िया जाल में फंस गई और शिकारी खुश हो गया। चिड़िया ने कहा– मुझे छोड़ दो, मैं जीवनभर तुम्हारा अहसान मानूंगी। लेकिन शिकारी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

चिड़िया ने फिर विनती की तो शिकारी ने कहा– तुम्हें इसलिए थोड़े ही पकड़ा था कि छोड़ दूँ। वैसे भी आज एक भी शिकार हाथ नहीं आया।

चिड़िया ने हार नहीं मानी और कुछ सोचकर शिकारी से कहा– देखो अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें तीन बातें बताऊंगी।

शिकारी ने कहा– कैसी तीन बातें?

चिड़िया ने कहा– बड़े काम की तीन बातें। उन तीनों बातों को जानकर तुम्हें जीवन में बहुत लाभ मिलेगा। मैं सच कह रही हूँ।

शिकारी बोला– जान बचाने की अच्छी कोशिश है अगर मैं तुम्हारी बात नहीं मानूं और तुम्हें न छोड़ूं, तो?

चिड़िया ने कहा– देखो इसमें फायदा तुम्हारा ही ज्यादा है। यदि तुम मुझे मार दोगे तो वह तीनों बातें भी मेरे साथ चली जाएंगी और तुम जीवनभर पछताओगे कि तुमने मेरी बात क्यों नहीं मानी?

शिकारी चिड़िया की बात सुनकर सोच में पड़ गया और बोला– तुम पर मैं कैसे विश्वास करूँ? यदि मैंने तुम्हें छोड़ दिया तो हो सकता है तुम मुझे धोखा दे दो और मौका पाकर उड़ जाओ।

चिड़िया ने कहा– तुम्हारे पास कोई चारा भी तो नहीं है। अगर वे बातें जानना चाहते हो तो तुम्हें मुझ पर विश्वास तो करना ही होगा। यकीन दिलाती हूँ कि मैं तुम्हें धोखा नहीं दूंगी। बस कुछ शर्तें जरूर रखूंगी।

शिकारी ने कहा– अब ये शर्तों वाली बात कहाँ से आ गई? ये क्या चक्कर है? चलो ठीक है। बताओ क्या-क्या शर्तें हैं तुम्हारी?

चिड़िया ने कहा– पहली बात मैं तुम्हारे बाएं कंधे पर बैठकर बताऊँगी। दूसरी बात उस दीवार पर बैठकर और तीसरी बात सामने वाले पेड़ की डाल पर बैठकर बताऊँगी। अगर तुम तीनों बातों का अपने जीवन में प्रयोग करोगे तो यकीन मानों बहुत बड़े आदमी बन जाओगे।

शिकारी ने कहा– सच! क्या तुम वाकई मुझे बड़ा आदमी बनने का राज बता रही हो? यानी मेरे पास बहुत सारा धन आ जाएगा।

चिड़िया ने कहा– हाँ! मैं तुम्हें जिन्दगी के सबसे गहरे रहस्य बताने जा रही हूँ। जो तुम्हें जिन्दगी पर चलने की राह बताएंगे।

शिकारी ने चिड़िया को कंधे पर बैठा लिया। फिर चिड़िया ने कहा– जीवन में किसी भी ऐसी बात पर विश्वास कभी मत करो, जो असम्भव हो। फिर वह बात चाहे किसी ने भी क्यों न कहीं हो।

चिड़िया ने पहली बात बताई और फुर्र से उड़ गई। चिड़िया शर्त के अनुसार सामने दीवार पर जा बैठी। शिकारी ने उसे दूसरी बात बताने को कहा।

चिड़िया ने कहा– जो चीज हाथ से निकल जाए उसके लिए मत पछताओ।

इतना कहकर चिड़िया बोली– अब मैं तुम्हें राज की बात बताती हूँ। मेरे पेट में आधा किलो वजन का हीरा है। यदि तुम मुझे मार देते तो वह तुम्हें मिल जाता और तुम लखपति हो जाते।

शिकारी ने कहा– क्या कहा? तुम्हारे पेट में हीरा है?

शिकारी ने रोना शुरू कर दिया– हाय! मैं तो लुट गया। ये मैंने क्या किया? काश! मैंने तुम्हें पहले ही मार दिया होता तो वह हीरा मुझे मिल जाता।

चिड़िया बैठी-बैठी सारा नजारा देख रही थी। चिड़िया ने कहा– मूर्ख अभी बताया न कि जो चीज हाथ से निकल जाए, उसके लिए मत पछताओ। उसके भी पहले बताया था कि जो सम्भव नहीं, उस पर विश्वास मत करो। बेवकूफ! मेरा वजन 500 ग्राम भी नहीं है, फिर मेरे पेट में आधा किलो का हीरा कहाँ से आएगा?

चिड़िया की बातें सुनकर शिकारी चौंक पड़ा। वह चिड़िया के सामने हाथ जोड़कर बोला– हाँ! मैं भूल गया था लेकिन अब ऐसी भूल नहीं करूंगा। तुम मुझे तीसरी बात बताओ।

चिड़िया ने कहा– तीसरी बात बताने का क्या फायदा जब तुम मेरी दोनों बातों पर अमल न कर सके तो तीसरी बात क्या मानोगे? इसलिए अब तुम्हारी सजा ये है कि मैं बिना तीसरी बात बताए यहाँ से जा रही हूँ। ❖

प्रस्तुति : डॉ. कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

पहेलियां

1. ऐसा हूँ मैं शास्त्र अनोखा,
रुपये पैसे की नीति बनाता।
कौटिल्य की हूँ रचना प्यारी,
बोलो बच्चों क्या कहलाता?

2. कश्मीर का इतिहास है जिसमें,
ऐसी हूँ मैं पुस्तक न्यारी।
कल्हण ने लिखा है मुझको,
याद करे ये दुनियां सारी।।

3. मेरे पास इक पुस्तक न्यारी,
जिसको पढ़ती दुनियां सारी।
विष्णु शर्मा की रचना हमारी,
नाम बताओ राज दुलारी?

4. तम को दूर भगाने वाला,
तीन अक्षर का मेरा नाम।
प्रथम हटे तो 'पक' बन जाता,
नाम बताओ भोलू राम?

5. ऐसा त्योहार अनोखा बच्चों,
जग रोशन कर देता।
चहुंदिश चलती फुलझड़ियां,
तुम से कुछ न लेता।।

6. तीन अक्षर का मेरा नाम,
हर त्योहार में मुझको खाओ।
प्रथम अक्षर 'म' है मेरा,
झटपट मेरा नाम बताओ?

7. तम को दूर भगाने वाली,
दीपक मुझको समझ न लेना।
प्रथम अक्षर 'झ' मेरा,
नाम मेरा बच्चों अब कहना।।

8. धूम धड़ाका खूब करूं मैं,
तीन अक्षर का मेरा नाम।
अंतिम अक्षर 'ख' है मेरा,
नाम बताओ भोलूराम?

9. एक नार का यह भूगोल,
नीचे चपटी ऊपर गोल।
जब वह सिर पर आग लगाए,
जो देखे सबके मन भाए।।

10. बोल नहीं पाती हूँ मैं,
और सुन नहीं पाती।
बिन आँखों के हूँ अंधी,
पर सबको राह दिखाती।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें।)

कहानी : दर्शन सिंह आशट

फैसला

जुगनू ने अपनी गुल्लक से रुपये निकालकर गिने। पूरे पांच सौ थे। वह खुशी से बोला, ''वाह! इस बार आएगा मजा तो। जितने पटाखे मैं लेकर आऊंगा, शैरी के पास तो उस से आधे भी नहीं होंगे।''

शैरी जुगनू का दोस्त था। दोनों दोस्त दीपावली पर भांति-भांति के पटाखे खरीदने की योजनाएं बना रहे थे।

''मैं भी इस बार स्पेशल रेलगाड़ी लाऊंगा। जब धागे से बंधी यह रेलगाड़ी इधर-उधर दौड़ेगी तो देखने वाले दंग रह जाएंगे। पांच दर्जन बम, महताबी डिबियां, फुलझड़ियां, छतरी वाला बम। कई दिनों तक खत्म नहीं होगी मेरी आतिशबाजी।'' स्कूल में खेलते समय शैरी ने जुगनू से कहा।

घर वापिस आते समय दोनों दोस्तों ने गगन से पूछा, ''तुम कौन-कौन सी आतिशबाजी ला रहे हो?''

गगन तपाक से बोला, ''मैं तो भाई एक सौ बमों वाली लम्बी लड़ी लाऊंगा। जब तड़-तड़ करती हुई चलेगी तो गली-मोहल्ले वालों को बहरा न कर दिया तो कहना? पापा से मैंने रुपये भी ले लिए हैं।''

आखिर दीपावली का दिन भी आ गया।

सुबह से ही बाजार में खूब चहल-पहल थी। दुकानदारों ने आतिशबाजी को अपनी-अपनी दुकानों के आगे खूब सजाया हुआ था। शाम हुई तो शैरी ने आकर जुगनू के घर की घंटी दबा दी। जुगनू बाहर आया तो शैरी एकदम उससे बोला, ''जुगनू, पांच बज चुके हैं। पटाखों की गूंज तेज हो रही है। चलो हम भी आतिशबाजी खरीदने चलें।''

''चलते हैं यार। अभी-अभी गगन का भी फोन आया है। वह भी अपने साथ जाएगा। बस पांच मिनट में आ रहा है।'' जुगनू बोला।

शैरी एकदम बोला, ''मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि गगन के पांच मिनट कितने बड़े होते हैं। मैं खुद ही लेने जाता हूँ उस साहब को। तुम बस अपनी तैयारी रखना।'' यह कहकर शैरी एकदम बाहर निकला और अपनी साइकिल पर उसके घर की तरफ रवाना हो गया।

अभी शैरी को गये कुछ ही क्षण हुए थे कि अचानक ही शैरी के घर में उसको विज्ञान विषय पढ़ाने वाली अध्यापिका जतिन्दर कौर ने प्रवेश किया। उनके हाथ में एक समाचार-पत्र था।

मैडम ड्राइंगरूम में आ बैठी।

''जुगनू।'' मैडम बोली, ''मैं तुम्हारे भले की बात कहने आई हूँ। यह मत सोचना कि मैडम दीपावली के दिन मन खराब करने आ गई है।''

जुगनू उन्हें पानी का गिलास देकर पास ही सोफे पर बैठ गया और बोला, ''कौन सी बात मैडम?''

मैडम ने पूछा, ''पहले तुम ये बताओ कि तुम पटाखे खरीद लाये हो या नहीं?''

''नहीं मैडम।'' वह बोला, ''हम अभी खरीदने के लिए जाने ही वाले थे।''

''कितने रुपये के पटाखे खरीदोगे?'' उन्होंने फिर पूछा।

''जी पांच सौ रुपये के।'' जुगनू का उत्तर था।

''अब मेरी बात सुनिये।'' यह कहकर मैडम ने पानी का गिलास पिया और खाली गिलास को मेज पर रखकर बोली, ''देखो जुगनू, कुदरत ने हमारे सभी के बचाव के लिए 'स्पेस' में एक छाता ताना हुआ है जिसे हम 'ओजोन की परत' कहते हैं। यह परत ऑक्सीजन से बनी हुई है। शायद तुम्हें अभी पता न हो। फैक्टरियों और गाड़ियों में से निकलने वाला जहरीला धुआं ओजोन की इस परत को बहुत नुकसान पहुँचा रहा है। इसी कारण इस छाते में बड़े-बड़े छेद हो गये हैं।''

''फिर तो मैडम जो आज लाखों-करोड़ों पटाखे चलेंगे, उनका धुआं तो इस छाते को और भी नुकसान पहुँचा सकता है।'' जुगनू ने अपना डर प्रकट किया।

मैडम जतिन्दर कौर एकदम बोल उठीं, ''बिल्कुल ठीक कहा तुमने।'' इसके साथ ही उन्होंने एक प्रश्न भी जुगनू से कर दिया। ''यदि फैक्टिरियों, पटाखों और मोटरगाड़ियों का धुआं इस तरह ही निकलता रहा तो मालूम है क्या होगा?''

जुगनू ने 'न' में सिर हिला दिया।

''इस अत्यन्त धुएं के कारण ओजोन-छाते में पड़ चुके छेद और भी खुले हो जाएंगे। परिणाम यह होगा कि सूर्य की पैराबैंगनी घातक किरणें फसलों और पशु-पक्षियों को ही नहीं बल्कि सारी मनुष्य-जाति को बर्बाद करके रख देंगी। अगर हम इस अंधाधुध प्रवृत्ति को बिल्कुल नहीं रोक सकते। कुछ हद तक इसको रोकने का प्रयास तो करना ही चाहिए न? फैसला तुम्हारे हाथ में है। पटाखे खरीदने से पहले तुम इस समाचार-पत्र में छपा यह निबन्ध जरूर पढ़ लेना।

और मैडम जुगनू के हाथ में समाचार-पत्र थमाकर चली गईं। जुगनू निबन्ध पढ़ने लगा। ज्यों-ज्यों वह निबन्ध पढ़ता जा रहा था, उसकी आँखें खुलती जा रही थीं।

''क्या पढ़ने में व्यस्त हो जनाब, अब इसे छोड़ो और जल्दी चलो पटाखे खरीदने। देखो, गगन को भी ले आया हूँ।'' शैरी ने घर में प्रवेश करते हुए कहा।

''सॉरी शैरी। अब मैं पटाखे खरीदने नहीं जाऊंगा।'' जुगनू ने कहा।

''क्या?'' दोनों एकदम चौंक पड़े।

''पहले तुम ये निबन्ध पढ़ो। फिर अपना फैसला बताना।'' इतना कहकर जुगनू ने शैरी की तरफ वह समाचार-पत्र बढ़ा दिया। शैरी और गगन आश्चर्य से वह निबन्ध पढ़ने लगे। ज्यों-ज्यों वे दोनों निबन्ध पढ़ रहे थे त्यों-त्यों उनके विचार बदलते जा रहे थे।

गर्म लोहे पर चोट लगाता हुआ जुगनू बोला, ''अब चलें पटाखे खरीदने?''

गगन बोला, ''इन पटाखों का धुआं इतना खतरनाक भी हो सकता है? इसके बारे में तो पहले कभी इतना बढ़िया निबन्ध पढ़ा ही नहीं था।''

''क्या फैसला किया शैरी?'' इस बार जुगनू ने शैरी की तरफ मुड़ते हुए पूछा।

''जो तुम्हारा फैसला है।'' शैरी बोला।

''चलो इन रुपयों को किसी अच्छे काम के लिए अपनी-अपनी गुल्लक में डाल दें।'' अभी जुगनू ने यह बात कही ही थी कि पड़ोस में चीख-पुकार सुनाई दीं। पता चला कि जब रामू की मम्मी किसी के घर में काम करने के बाद अपने घर लौट रही थीं तो किसी नटखट लड़के ने एक बड़े बम को आग लगाकर गली में फेंक दिया और उस बम के कुछेक कण रामू की मम्मी की आँखों में पड़ गये थे। उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। उन्हें फौरन ही पास के एक अस्पताल में ले जाया गया।

कुछ ही क्षणों के पश्चात् तीनों दोस्त अपने-अपने रुपये लेकर अस्पताल में बैठे रामू के पिता जी को देने के लिए घर से रवाना हो गये।

❖

बाल कविता : डॉ. नरेन्द्रनाथ लाहा

सीख

जीवन में तुम सत्य बोलकर,
ऊँची मंजिल पाओगे।
मेहनत के बल पर तुम सारे,
पर्वत लांघ जाओगे।।

पढ़-लिखकर सारे जग को तुम,
ज्ञान की राह दिखाओगे।
सुन्दर मीठे बोल बोलकर,
जग में नाम कमाओगे।।

इसी सीख पर चलकर बच्चों,
एक आदर्श जीवन बनाओगे।
खुद खुश होंगे सब खुश होंगे,
देश महान बनाओगे।।

कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

मिलती मंजिल

कठिन परिश्रम करो तभी तो
होंगे परीक्षा में तुम पास,
आलस करके बैठ गये तो
होना पड़ेगा फिर निराश।

मिले फल मीठा परिश्रम का
जो करता है, पाता है वो,
नहीं करे जो कठिन परिश्रम
'हार' का फल ही पाता है वो।

मिलती उनको अपनी मंजिल
सच्चे मन से करे जो काम,
आगे बढ़ते रहे सदा वो
अपना जगत में करते नाम।

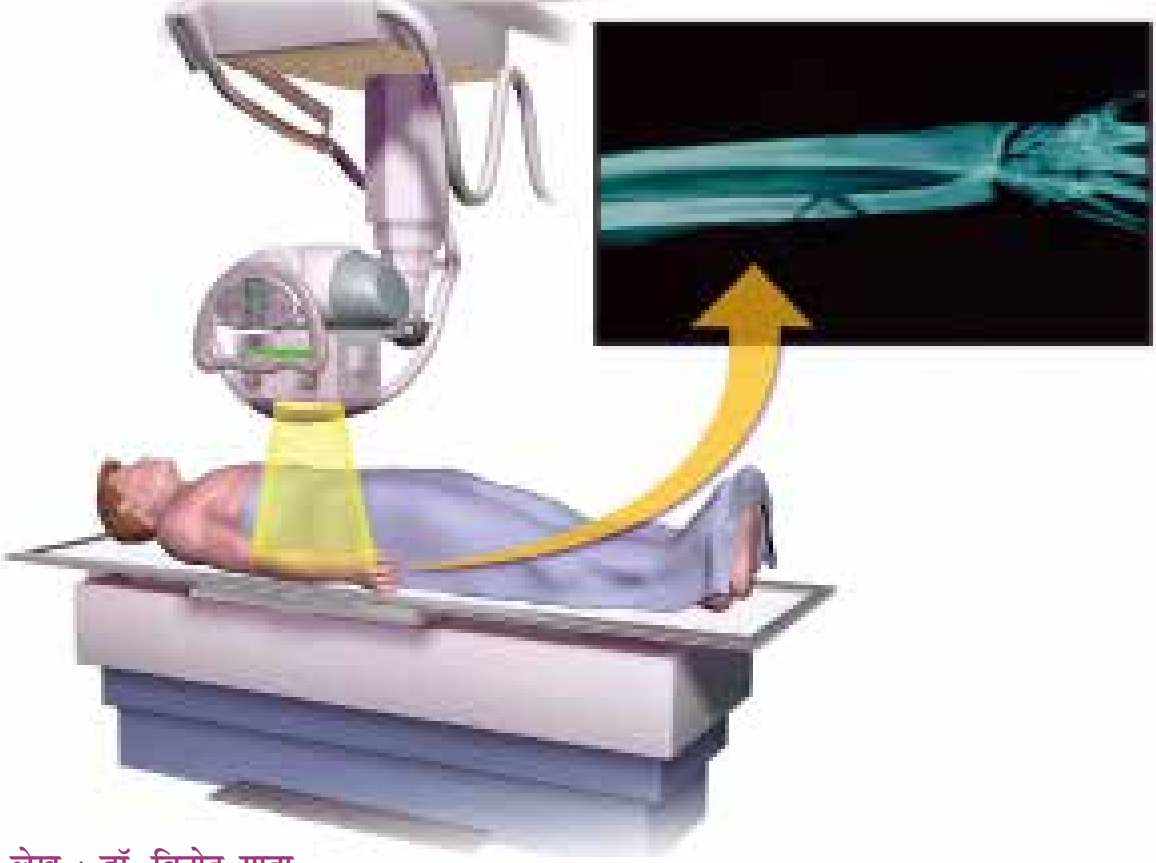

विज्ञान लेख : डॉ. विनोद गुप्ता

क्या है एक्स-रे?

एक जिज्ञासु बालक था विलियम रोंटजन। उसके घर से थोड़ी दूर पर एक फोटोग्राफर रहता था। एक दिन वह अपनी फोटो खिंचवाकर घर लौट रहा था तो उसके मन में यह विचार आया कि जब शरीर के बाहरी हिस्से की तस्वीर खींची जा सकती है तो भीतरी हिस्से की क्यों नहीं खींची जा सकती? लेकिन उसे इस विषय में किसी से कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिल सका। विलियम ने जब स्कूली शिक्षा पूरी कर कॉलेज में प्रवेश किया तब भी उसके मन में यही प्रश्न था।

विलियम का एक मित्र पेशे से डॉक्टर था। एक दिन विलियम अपने डॉक्टर मित्र के साथ बैठा इस सम्बन्ध में बातचीत कर रहा था कि एक ऐसा मरीज वहाँ आया जो पेटदर्द से पीड़ित था और दर्द के मारे बुरी तरह छटपटा रहा था। डॉक्टर ने उसके पेटदर्द का करण जानने की बहुत कोशिश की लेकिन न जान सका। अन्ततः एक दिन इसी पेटदर्द ने उस मरीज की जान ही ले ली।

विलियम को फिर लगा कि काश! कोई मशीन ऐसी होती जिससे उस मरीज के पेट के भीतर की फोटो आ जाती तो शायद वह बच जाता। उसने अपने डॉक्टर मित्र से इस सम्बन्ध में चर्चा की। डॉक्टर ने विलियम के विचार से सहमति जाहिर की और उसे स्वयं इस दिशा में पहल करने को कहा। विलियम ऐसी मशीन के आविष्कार की उधेड़बुन में लग गया जो शरीर के भीतरी तस्वीर ले सके।

विलियम रोंटजन शुरू से ही मेधावी छात्र थे। सन् 1888 में वे वुर्जबर्ग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बन गये। अब उनके लिए कोई नई खोज करना आसान था। उन्होंने हेनरिक और अन्य वैज्ञानिकों के विद्युत किरणों सम्बन्धी शोधों पर गहन अध्ययन किया।

सन् 1895 में एक दिन की बात है। वह कांच की गोली में कई नलियों को लगाकर कुछ खोज कर रहा था कि अकस्मात् उसे फोटोग्राफ प्लेट दिखाई देने लगी। मजे की बात तो यह थी कि वह प्लेट काले कपड़े से बंधी हुई कुछ दूरी पर रखी थी। यह प्लेट क्यों दिखाई दी, उसकी समझ में नहीं आया। उसने बदलकर देखा, फिर भी वह दिखाई दे रही थी। तब उसने पाया कि जिस विसर्जन नलिका पर वह प्रयोग कर रहा है उसका सम्बन्ध उन फोटोग्राफ प्लेटों से है लेकिन प्रो. विलियम इन चमत्कारिक किरणों को जान न सके।

गणितीय शाखा में अज्ञात वस्तु विशेष को प्रदर्शित करने वाली 'एक्स' के नाम पर इन किरणों का नाम 'एक्स-रे' रखा गया जो आज भी प्रचलित है। सन् 1900 में प्रो. विलियम रोंटजन को इस महत्वपूर्ण खोज के लिए बर्नार्ड पदक मिला। इसके पूर्व 1896 में रमफोर्ड मेडल से उन्हें सम्मानित किया गया। 1901 में उन्हें भौतिकी का प्रथम नोबल पुरस्कार मिला।

सन् 1923 में प्रो. विलियम रोंटजन की मृत्यु हो गई। लेकिन उनका यह आविष्कार चिकित्सा विज्ञान के लिए आज भी एक वरदान बना हुआ है।

एक्स-रे किरणें एक प्रकार की विद्युत चुम्बकीय तरंगें हैं। प्रकाश किरणों की तुलना में इन तरंगों की लम्बाई कम होती है लेकिन इनकी आवृत्ति अत्यधिक होने से ये हमारें मांस से ही आर-पार निकल जाती हैं। प्रकाश वेग से चलने वाली ये किरणें हमें नंगी आँखों से दिखाई नहीं दे सकती हैं।

एक्स-रे किरणें एक ट्यूब या नलिका में उत्पन्न की जाती हैं। नलिका से हवा निकालकर निम्न दबाव पैदा किया जाता है। दिखने में बल्ब जैसी लगने वाली यह ट्यूब कठोर कांच से तैयार की गई होती है।

इस नली में दो इलेक्ट्रोड लगे होते हैं– एक धनात्मक और दूसरा ऋणात्मक। जब इन इलेक्ट्रोडों का सम्पर्क अन्य विभान्तर (Potential Difference) वाली विद्युत धारा से होता है तो ऋणात्मक इलेक्ट्रोड से इलेक्ट्रॉन निकलने लगते हैं। जब ये धनात्मक इलेक्ट्रोड के टंगस्टन नामक पदार्थ से टकराते हैं तो एक्स किरणें पैदा करते हैं जो ट्यूब से बाहर निकलती हैं।

एक्स किरणों की सबसे बड़ी खूबी यह है कि कम घनत्व वाले पदार्थों में से तो आर-पार निकल जाती हैं। जबकि अधिक घनत्व वाले पदार्थों में यह अवशोषित (Absorbed) हो जाती हैं। इसी खूबी की वजह से चिकित्सक शरीर के विभिन्न विकारों का पता लगा लेते हैं। जब भी शरीर के किसी भाग में उत्पन्न दोष या विकार का पता लगाना होता है। उस पर एक्स किरणें डाली जाती हैं और उसकी फोटो एक फिल्म पर ले ली जाती है।

एक्स-रे फिल्म देखकर टूटी या गली हड्डी, गोली, पथरी और क्षय जैसे रोग का पता लगाया जाता है।

कहानी : विभा वर्मा

मंत्री का चुनाव

नन्दनवन का राजा शेरसिंह बहुत ही समझदार और शान्तिप्रिय राजा था। उसके राज्य में किसी भी जानवर को किसी से कोई कष्ट नहीं था। सब ओर खुशहाली ही खुशहाली थी। सभी अमन-चैन से अपनी जिन्दगी गुजार रहे थे। नन्द. नवन की प्रजा को अमन-चैन की जिन्दगी जीते देखकर आस-पास के अन्य जंगल के राजा भी दांतों तले अंगुली दबा लेते। राजा शेरसिंह की इतनी अच्छी सुव्यवस्था का कारण यह था कि नन्दनवन के राजकार्य के सभी कामों के लिए अलग-अलग सुव्यवस्थित विभाग बना रखे थे। हर विभाग का मुखिया एक मंत्री होता था। खाद्य विभाग का रखवाला मंगूराम भालू था तो गृह विभाग का मस्तराम मौलू हाथी था। न्याय विभाग के मुखिया थे वयोवृद्ध सियार; तो सुरक्षा का जिम्मा हट्टे-कट्टे चाँदमल चीते के ऊपर था। इन सभी लोगों के ऊपर एक प्रधानमंत्री के रूप में अपना दायित्व निभाने में माहिर बब्बर शेरूमल थे। जो अपनी सूझ-बूझ और दूरदर्शिता द्वारा पूरे नन्दनवन को सुव्यवस्थित रखने में राजा शेरसिंह को मंत्रणा एवं परामर्श देते रहते।

दुर्भाग्य से एक बार जंगल में कुछ शिकारी आ गये और प्रधानमंत्री बब्बर शेरूमल उनकी गोली का शिकार हो गए। अकस्मात् उनकी मृत्यु से राजा शेरसिंह बहुत चिन्तित हो उठे। आखिर नन्दनवन की सुरक्षा का प्रश्न था। आखिर किसे चुने इस प्रधानमंत्री पद के लिए? क्योंकि इस प्रमुख पद को पाने के लिए सभी 'जी-जान' से लगे हुए थे। कई दिन के सोच-विचार के बाद राजा शेरसिंह ने यह निर्णय लिया कि जो भी मंत्री मेरे प्रश्नों का सबसे उपयुक्त उत्तर देगा उसे ही वे प्रधानमंत्री का पद दे देंगे।

परीक्षा के दिन सभी लोगों को एक स्थान पर जमा होने का आदेश दिया गया। सभी मंत्री अपनी विद्वता की धाक जमाने के लिए बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने पहुँचे।

राजा शेरसिंह ने कहा– मंत्रीगण! यह तो आप जानते ही हैं कि जो मेरे प्रश्नों का सबसे

अधिक उपयुक्त उत्तर देगा उसे ही प्रधानमंत्री का पद मिलेगा। यह कहकर राजा शेरसिंह ने प्रश्न पूछा– मान लीजिए दरबार लगा हुआ है और कोई शिकारी मेरे ऊपर निशाना साधे खड़ा है। मैं उसे नहीं देख पाता पर तुम्हारी नज़र उस पर पड़ जाए तो आप क्या करेंगे?

प्रश्न सुनते ही खाद्य विभाग के मंगूराम भालू शान से अपना हाथ माथे पर फेरते हुए बोले– महाराज! मैं उस पापी पर आपकी हत्या का आरोप लगाकर मुकद्दमा चलाऊँगा जिससे उसे उचित दंड दिया जा सके। इसी तरह से सभी ने अपनी-अपनी बुद्धि का कौशल दिखाते हुए उत्तर अपने-अपने ढंग से दिये। अन्त में सुरक्षा मंत्री चाँदमल चीते ने अपना मत इस प्रकार रखा।

महाराज! उस नीच पापी शिकारी को तो दण्ड मैं दूँगा ही पर सबसे पहले आपकी जान की रक्षा करना आवश्यक होगा। इसलिए मैं पूरी तत्परता से आपको आपके आसन से हटाने का प्रयत्न करूँगा जिससे उसका निशाना चूक जाये और शीघ्रता से छलांग द्वारा उस पर हमला कर उसे पलभर में ही उसकी धूर्तता का मजा चखा दूँगा।

राजा शेरसिंह बहुत प्रभावित हुए और प्रसन्न होकर वहीं पर तुरन्त चाँदमल चीते को प्रधानमंत्री पद देने की घोषणा कर दी। इस प्रकार सभी जानवरों ने भी राजा के इस निर्णय की भूरि-भूरि प्रशंसा की। साथ ही चाँदमल चीते की भी प्रशंसा की जिसने अपनी बुद्धि द्वारा प्रधानमंत्री के पद को हासिल कर लिया।

❖

अजब-गजब : मिताली जैन

कभी देखा है ऐसा पेड़!

प्रकृति में निहित सौंदर्य को सभी जानते हैं लेकिन उसमें छिपे रहस्यों को जान पाना अभी तक मनुष्य के लिए संभव नहीं हो पाया है। प्रकृति ने इतनी विविधतापूर्ण जीवसृष्टि की रचना की है कि हर कहीं कुछ न कुछ अलग व अद्‌भुत दिख ही जाता है। हमारे जीवन के अभिन्न अंग माने जाने वाले पेड़-पौधे सिर्फ हमारे लिए खाद्य पदार्थ या मधुर पेय ही नहीं जुटाते बल्कि अपनी विलक्षणताओं से हमें आश्चर्यचकित भी कर देते हैं। ऐसा ही एक अनोखा पेड़ है ड्रैगन ब्लड ट्री। आप इसके नाम पर मत जाइए, इसका नाम जितना भयावह है, वह उतना ही सुंदर है। इस पेड़ की संरचना ही इसकी खासियत है। इसे देखकर लगता है कि जैसे प्रकृति ने मनुष्यों के लिए अपनी छतरी खोल दी हो।

हिंद महासागर में सोकोट्रा द्वीपसमूह व पश्चिमी मोरक्को में पाया जाने वाला ड्रैगन ब्लड ट्री बहुत ही धीमी गति से विकसित होता है। वैसे यह सोकोट्रा ड्रैगन ट्री व ड्रेकेना सिनाबरी के नाम से भी जाना जाता है। ड्रेकेना सिनाबरी की सर्वप्रथम जानकारी 1835 में सोकोट्रा में ईस्ट इंडिया कंपनी को एक सर्वेक्षण में प्राप्त हुई, जिसका नेतृत्व लेफ्टिनेंट वेलस्टेड ने किया था। इसे सबसे पहले पेट्रोकार्पस ड्रेको नाम दिया। लेकिन 1880 में एक स्कॉटिश वनस्पतिशास्त्री इसहाक बेले बाल्फोर ने ड्रैगन ट्री की विभिन्न

प्रजातियों में से इसका औपचारिक वर्णन किया, साथ ही उन्होंने इसका नाम बदलकर ड्रेकेना सिनाबरी रखा।

आपको यह बता दें कि ड्रेकेना की 60 से 100 प्रजातियों के बीच केवल छह प्रजाति ही ऐसी हैं, जिसका विकास एक पेड़ की तरह हुआ है। उन छह प्रजातियों में ड्रेकेना सिनाबरी भी एक प्रजाति है। ड्रैगन ब्लड ट्री सोकोटा द्वीप का सबसे प्रसिद्ध व विशिष्ट वृक्ष है, जिसका मुख्य कारण उसका आकार है। यह ड्रैगन ब्लड ट्री का आकार है। जिसके चलते वह काम मिट्टी वाले शुष्क स्थानों में भी आसानी से विकसित हो सकता है। ड्रैगन ब्लड ट्री की शाखाएं परिपक्व होने पर स्वत: ही एक छतरी का आकार ले लेती हैं तथा पत्तियों सहित यह लगभग 60 सेंटीमीटर लंबा व 3 सेंटीमीटर चौड़ा होता है। पेड़ का तना व उसकी शाखाएं काफी मोटी और ताकतवर होती हैं तथा प्रत्येक शाखा बार-बार दो वर्गों में विभाजित हो जाती है। इस पेड़ पर पत्तियां केवल उसकी सबसे कम उम्र की शाखाओं के अंतिम छोर पर ही पाई जाती है। इस पर तीन से चार साल में नई पत्तियां आती हैं, तब तक पुरानी पत्तियां पूरी तरह परिपक्व हो जाती हैं तथा वह फिर एक शेड की तरह काम करती हैं। इस पेड़ पर फूल लगभग फरवरी के महीने में आते हैं। वैसे इस पेड़ पर फूल लगने की प्रक्रिया उस स्थान के वातावरण पर भी निर्भर करती है। ड्रैगन ब्लड ट्री की शाखाओं के अंतिम छोर पर सफेद व हरे रंग के सुगंधित फूलों का गुच्छा लगता है।

इसमें छोटे जामुन के फल भी विकसित होते हैं, जिसमें एक से तीन बीज पाए जाते हैं। जैसे ही इस पेड़ पर फल लगने शुरू होते हैं तो प्रारंभिक चरण में वह हरे रंग से बदलकर काले हो जाते हैं तथा जब इन फलों का पूरी तरह विकास होता है तो वे अन्त में ऑरेंज रंग में तब्दील हो जाते हैं। इन फलों को पूरी तरह परिपक्व होने में करीब पांच महीने का समय लगता है। ये फल अधिकतर पक्षियों द्वारा खाए जाते हैं। इस पेड़ के आकार का छतरी जैसा होने के पीछे कहीं न कहीं कारण ये पक्षी भी हैं, क्योंकि जब यह पेड़ पर बैठकर अपनी चोंच की सहायता से जामुन खाते हैं तो इसकी पत्तियां भी तितर-बितर हो जाती हैं। पेड़ों की इस सदाबहार प्रजाति के वृक्षों को काटने पर खून की तरह का लाल रंग निकलता है, जिसके कारण इसे 'ड्रैगन ब्लड ट्री' नाम दिया गया है। ❖

आत्म-समीक्षा : आत्म-चिन्तन

डेनमार्क के मूर्तिकार थोबिडन अपने समय के प्रसिद्ध कलाकार थे। अपने जीवनकाल में उन्होंने अनेक सुन्दर मूर्तियों का निर्माण किया। एक दिन एक सभा में एक प्रशंसक ने उनसे पूछा– जनाब, आपने किस गुरु से मूर्तिकला सीखी?

थोबिडन मुस्कुराए और बोले आत्म-सुधार मेरा स्कूल है और आत्म-समीक्षा मेरा गुरु। मैंने सदैव अपनी कलाकृतियों में कमियों को खोजा और उन्हें दूर करने की कोशिश की। किसी भी मूर्ति को अच्छा बनाने के लिए जो जरूरी था उसे अविलम्ब अपनाया। इन्हीं कारणों से मैं आज इस मुकाम पर पहुँच पाया हूँ।

प्रस्तुति : ऊषा सभरवाल

बाल कविता : मीरासिंह 'मीरा'

श्रम का फल

बच्चे जो भी आलस त्यागें,
उनकी सोई किस्मत जागे।
पढ़ते-लिखते बढ़ते आगे,
उनके पीछे दुनिया भागे।।

खेलकूद में नाम कमाते,
करें पढ़ाई अव्वल आते।
नाम जगत में करते रोशन,
सुरभित होता उनका जीवन।।

बाधा उनको रोक न पाती,
नदियां उनको राह दिखाती।
पर्वत उनको देता रास्ता,
श्रम का फल होता मीठा।।

बाल गीत : दिनेश दर्पण

पुस्तक

सबको पाठ पढ़ाती पुस्तक–
सबको सबक सिखाती पुस्तक।
पढ़ाती पुस्तक, सिखाती पुस्तक–
हमें सुसभ्य बनाती पुस्तक।।

हर किसी की साथी बनकर–
जीवन भर साथ निभाती पुस्तक।
नन्हें-मुन्ने बच्चो के संग–
हर्षित हो मुस्काती पुस्तक।।

पढ़ना और पढ़ाना अच्छा–
यही सन्देश बताती पुस्तक।
पढ़ा-लिखा गुणवान बनाकर–
जीवन सफल बनाती पुस्तक।।

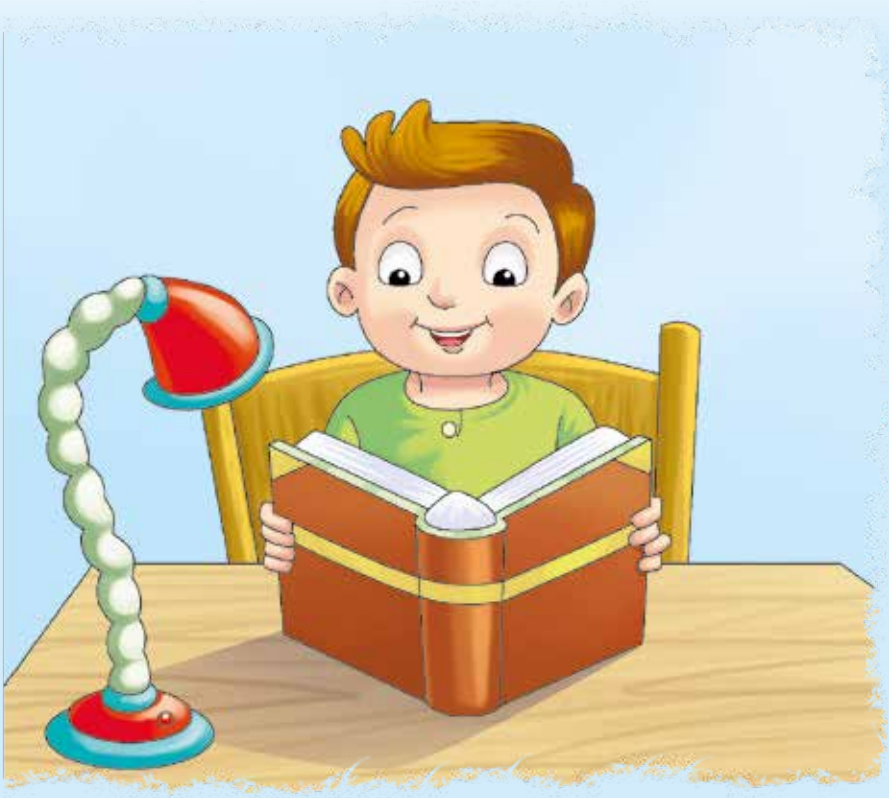

बाल कहानी : दिनेश प्रतापसिंह 'चित्रेश'

एक शरारत से

दीपावली का समय था। दीपू और महेश बाजार में थे। शाम का समय और चारों तरफ रौनक ही रौनक। दुकानें रोशनी की झिलमिलाती सजावट के साथ सजी हुई थी। सड़क के दोनों किनारों पर लाई-गट्टा, खिलौनों

और पटाखों की दुकानें आ लगी थीं। मिठाई की दुकानों पर तो खरीदारों की अच्छी खासी भीड़ थी।

दोनों मटरगश्ती करते चौक में पहुँच गए। यहाँ की चहल-पहल का क्या कहना। वे आगे बढ़कर एक आतिशबाजी की दुकान के सामने खड़े हो गए। तभी दीपू ने कहा– ''महेश, मेरे दिमाग में एक आइडिया है, जिससे हम ढेर सारे पटाखे छोड़ने का मजा ले सकते हैं।''

''वो कैसे?'' महेश ने आश्चर्य से दीपू को देखते हुए सवाल किया।

''बताना क्या, अभी करके दिखाता हूँ।'' दीपू ने आराम से जवाब देते हुए पूछा– ''तुम्हारे पास कुछ पैसे होंगे?''

''दस-बारह रुपये हैं।''– महेश ने बताया।

दीपू ने अपनी जेब से कुछ पैसे निकालकर महेश की तरफ बढ़ा दिये।

''यह भी लो और जाकर एक बड़ा वाला रॉकेट और माचिस ले आओ।''

महेश दस मिनट बाद दोनों चीजें लेकर लौटा। दीपू महेश के साथ सड़क की दूसरी तरफ फुटपाथ पर चला गया। उसने महेश से रॉकेट लिया और उसे पटाखों की दुकान की तरफ तिरछा करके एक दरार में फंसा दिया। इसके बाद सशंकित भाव से चारों तरफ देखते हुए दीपू ने माचिस की तीली जलाई और रॉकेट की बत्ती से छुआ दी।

बस, फिर क्या था, एक सेंकेड में सनसनाता रॉकेट पटाखों की दुकान में जा गिरा। रॉकेट का जलता बारूद एक अनार पर पड़ गया। आग का रंग-बिरंगा फव्वारा फूट पड़ा। देखते-देखते आग के सम्पर्क में आकर धड़ाम-धड़ाम की आवाज के साथ पटाखे और बम फटने लगे। चर्खियां घूमने लगीं। आग ने भयानक रूप धारण कर लिया। चीखते-चिल्लाते लोगों में भगदड़ मच गई। जोरों से घंटियां धनधनाती फायर ब्रिगेड की गाड़ी आ पहुँची। इस अफरा-तफरी में दीपू और महेश भी एकदम से घबरा गये।

वे सहमे से घर पहुँचे। दोनों का मकान एक ही था। निचले हिस्से में दीपू और ऊपर के हिस्से में महेश अपने माता-पिता के साथ रहता था। यहाँ उदासी का माहौल था। उनके माता-पिता परेशान से थे। पड़ोस के अंकल लोग उन्हें समझा रहे थे। दीपू झट माँ के पास पहुँच गया और

बोला– ''मम्मी! क्या बात है? आप सब ...।''

''बेटा, अभी दो दिन पहले तुम्हारे और महेश के पापा जी ने साझे में पटाखों की एक दुकान खोली थी। आज उसमें आग लग गई।'' माँ ने बताया।

दीपू और महेश घबरा गये। उनके दिल बुरी तरह धड़कने लगे। वे चुपचाप कमरे में आ गये। दीपू बोला– ''खेल-खेल में कैसा अनर्थ कर डाला हमने?''

''मुझे बड़ा डर लग रहा है। चलो सारी बात बता बताकर मम्मी-पापा से क्षमा मांग लें।'' महेश ने सुझाव दिया।

''नहीं।'' दीपू ने सख्ती से मना करते हुए समझाया– ''ठीक यह रहेगा कि हम एकदम सन्नाटा खींच ले। अपनी शैतानियां छोड़कर अच्छी राह लगना शुरू करें। उसके बाद देखेंगे... ठीक।''

गुपचुप फैसला हो गया। समय बीतता रहा। हुल्लड़बाजी छोड़ी तो मन पढ़ाई-लिखाई में रमने लगा। विद्यालय से हफ्ते-दस दिन में जो शिकायतें आया करती थीं– अधूरे होमवर्क की, गैरहाजिरी की ... वह सब बंद। कई महीने बाद, एक रविवार की शाम थी। दीपू और महेश के मम्मी-पापा साथ बैठे चाय पी रहे थे। वे दोनों भी पास ही बैठे थे। उनमें अपनी पढ़ाई-लिखाई की चर्चा छिड़ी थी। सहसा महेश के पापा ने उनकी तरफ देखते हुए पूछा– ''बेटा, एक बात बताओ, पहले तुम्हारी शरारतों की कोई सीमा नहीं थी। मगर इधर सब ठीक-ठाक हो रहा है। स्कूल के किस गुरु जी का हाथ है, इस बदलाव के पीछे?''

''पापा, इसमें किसी गुरु जी का नहीं बल्कि एक शरारत का हाथ है।''– महेश ने दीपू की तरफ देखते हुए जवाब दिया।

''शरारत।'' महेश के पापा जी चौंक गये।

''जी अंकल, महेश सच कह रहा है।'' कहते हुए दीपू ने सारा सच उगल दिया।

पूरी घटना जानकर दीपू और महेश के मम्मी-पापा उन्हें देखते रह गए। चेहरे पर तनाव और झुंझलाहट के बीच पांच-सात मिनट के बाद संतोष आ टिका कि चार पैसा कमाने के लिए डाली गई अस्थायी दुकान जली तो उसके साथ महेश और दीपू की बुराईयों भी जल गई थीं।

❖

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन - प्रवीण कुमार

नहीं, नहीं आज मैं कोई शरारत नहीं करूँगी। चिंटू को भी नहीं सताऊँगी। वैसे भी, चिंटू तो आ ही नहीं रहा हमारे साथ।
मोंटू भी नही है। चलो हम दोनों ही चलते हैं।
मौली, ध्यान से सुनो, कुछ ऐसी आवाज़ें आ रही हैं जैसे कोई मुसीबत में है।

उधर चलकर देखते हैं कुछ न कुछ गड़बड़ तो है। अरे, वो देखो। कबूतर जाल में फँसे हैं।
अरे, अब क्या करेंगे, आज तो चिंटू, मोंटू भी नहीं हैं। वे तो इस जाल को मिनटों में काट देते।
किट्टी, मैं शिकारी का ध्यान रखती हूँ, तुम जल्दी से चिंटू को ले आओ जाल काटने के लिए।

चिंटू, चिंटू, जल्दी चलो, तुम्हें जाल काटना है।
किट्टी, आज मैं तुम्हारी बातों में नहीं आऊँगा।
चिंटू मैं झूठ नहीं बोल रही, पर तुम मेरी पीठ पर बैठो और फटाफट चलो।
वाह। किट्टी, आज तो तुमने सचमुच बहुत अच्छा काम किया। आज हम सबको तुम पर गर्व हो रहा है।

संग्रहकर्ता
महन्थ राजपाल (उटरू कला)

कभी न भूलो

❖ भगवान का आश्रय लेने वाले को दूसरे के आश्रय की आवश्यकता नहीं रहती।
– स्वामी रामसुखदास

❖ धर्म का अर्थ है विश्वास की एक नैतिक सुव्यवस्था में श्रद्धा। – महात्मा गाँधी

❖ पृथ्वी पर तीन रत्न हैं– जल, अन्न और सुभाषित; मूर्ख लोग ही पाषाण खण्डों को रत्नों का नाम देते हैं। – चाणक्य नीति

❖ किसी के गुणों की प्रशंसा में अपना वक्त फिजूल न गंवाओ। उसके गुणों को अपनाने की प्रयास करो। – कार्ल मार्क्स

❖ तुम हँसते हुए देखोगे कि सारा संसार तुम्हारे साथ हँसता है, लेकिन रोते समय तुम स्वयं को अकेला पाओगे। – विलकॉक्स

❖ कर्म वह दर्पण है जिसमें हमारा प्रतिबिम्ब झलकता है। – विनोबा

❖ प्यार और सत्कार का मूल स्रोत ब्रह्मज्ञान है।
– निर्मल जोशी

❖ महान आत्माओं को सर्वदा अल्प सोच वाली मानसिकता का प्रचण्ड विरोध सहना पड़ा है।
– ऑगस्टाइन

❖ एकजुट होना तो महज शुरुआत है, एक साथ बने रहना प्रक्रिया है लेकिन एक साथ काम करना ही सफलता है। – हेनरी फोर्ड

❖ जो बात सिद्धांततः गलत है, वह व्यवहार में भी उचित नहीं है। – डॉ. राजेंद्र प्रसाद

❖ बेहतर उपदेश आप अपने होंठों की बजाय अपने जीवन से दे सकते हैं।
– ओलिवर गोल्डस्मिथ

❖ जो आप स्वयं पसन्द नहीं करते, उसे दूसरों पर मत थोपिए। – कन्फ्यूशियस

❖ सम्पन्नता मन से होती है, धन से नहीं। बड़प्पन बुद्धि से होता है उम्र से नहीं।
– शेख सादी

❖ दीपक स्वप्रकाश के लिए दूसरे दीपों की अपेक्षा नहीं करता। आत्म-ज्ञान हेतु किसी मदद की जरूरत नहीं होती।
– आदि शंकराचार्य

❖ विद्वान शत्रु भी श्रेष्ठ होता है, मूर्ख मित्र हितकारी नहीं। – विष्णु शर्मा

❖ जो अभिमानी है, जिसने सबसे वैर बांध रखा है उसके मन को कभी शांति नहीं मिलती।
– श्रीमद्भागवत गीता

❖ सत्य केवल ईश्वर ही है। सत्य से जिस प्रकार जीवन का उद्धार होता है। उस तरह यज्ञ, दान और नियमों से नहीं। एकमात्र सत्य ही अविनाशी ब्रह्म है। – महाभारत

कहानी : परिधि जैन

मेहनत का सुख

एक था राजा। राजाओं को तरह-तरह के शौक हुआ करते हैं। उस राजा को सिर्फ एक शौक था– खाने का। तरह-तरह का खाना खाने का। उसकी पाकशाला (रसोईघर) में रसोइयों और बावर्चियों की एक पूरी फौज हुआ करती थी। रोजाना नये-नये पकवान और एक-से-एक स्वादिष्ट व्यंजन बनाये जाते थे।

राजा का भोजनकक्ष भी अद्भुत था। उसमें खाने की मेज इतनी बड़ी थी कि आठ-दस आदमी उस पर पैर फैलाकर सो सकते थे। भोजन के समय तरह-तरह के रंग-बिरंगे, महकते हुए, खट्टे-मीठे, नमकीन व्यंजनों से वह मेज भरी रहती थी।

राजा खाना खाने आता तो शाही बैंड बजने लगता। सेवक आगे गुलाब और केवड़ा छिड़काते चलते। वह खाने की मेज तक आता तो अनेकों परोसने वाले हाथ जोड़कर खड़े हो जाते। एक-एक करके खाद्य पदार्थ उसके सामने पेश किये जाते। वह रुचि या अरुचि से उन्हें देखता और सूंघता। किसी-किसी को चख लेता तो बनाने वाला मानो निहाल हो जाता।

एक बार यकायक क्या हुआ कि राजा की भूख गायब हो गई। उसने चखना भी बंद कर दिया। बढ़िया से बढ़िया चीजें भी सूंघ कर ही रह जाता। धीरे-धीरे सूंघना भी जाता रहा। बस, खाने की मेज पर सजी सैंकड़ों चीजों को देखकर ही उसका पेट भर जाता। मगर इसका नतीजा यह हुआ कि हट्टा-कट्टा राजा सूखकर हड्डियों का ढांचा रह गया और बेहद चिड़चिड़ा हो गया।

उसके मंत्रियों को बड़ी चिन्ता हुई। राज-काज ठीक से नहीं चल पा रहा था क्योंकि राजा बीमार-सा हो गया। उन्होंने अनेक कुशल वैद्यों को बुलाया। वे इलाज करने लगे। मगर फायदा कैसे होता? औषधि तो राजा के गले से नीचे उतरती ही नहीं थी। राजा दिन-रात एक ही बात कहता, मुझे कोई स्वादिष्ट वस्तु खिलाओ तभी मैं ठीक होऊँगा। एक-से-एक माहिर रसोइये आये। उन्होंने जाने कितने व्यंजन पकाये? मगर राजा ने सूंघे भी नहीं। औषधियों को तो देखते ही वह क्रुद्ध हो जाता।

इस तरह से राजा मरणासन्न हो गया। कोई उपाय शेष नहीं रहा। मंत्रियों ने रानी के पास जाकर उससे सलाह ली और एक मत होकर घोषणा करवाई कि जो आदमी राजा की भूख को लौटा सकेगा, उसे एक लाख स्वर्ण-मुद्राएं मिलेंगी।

इसके बाद रोजाना राजमहल के सामने होशियार लोगों का मजमा लगने लगा। बड़े-बड़े वैद्य-हकीम तो आये ही, संगीतकार, कवि और चित्रकार भी आये। सबको मौका दिया गया मगर सब अपना-सा मुँह लेकर वापस हुए।

एक थे चिरंजीलाल। एक दिन उन्होंने लोगों से राजा की विचित्र बीमारी के बारे में सुना। ईनाम के बारे में भी और वे पहुँच गये राजमहल के सामने। वहाँ लगी भीड़ को धकियाते किसी तरह वे प्रधानमंत्री तक पहुँच गये। प्रधानमंत्री उदासी में डूबे बैठे थे। रह-रहकर उनके दिल से आह निकल जाती– ''आह! राज्य का क्या होगा? कोई उत्तराधिकारी भी नहीं।''

तभी चिरंजीलाल ने छाती ठोककर कहा, ''श्रीमान्! मैं राजा को ठीक कर सकता हूँ, उनकी भूख लौटा सकता हूँ।''

प्रधानमंत्री ने उपेक्षापूर्वक उनकी ओर देखकर कहा, ''यह सुनते-सुनते मेरे कान पक गये हैं। कोई ठीक नहीं कर पाता।''

चिरंजीलाल ने दृढ़तापूर्वक कहा, ''सुनिये, अगर मैं उन्हें ठीक नहीं कर पाऊँ तो मेरी गरदन उतरवा लीजिएगा। मगर मेरी शर्त बहुत कड़ी है। यदि आप पालन कर सकें तो मैं अपना काम शुरू करूँ।''

इस बार प्रधानमंत्री कुछ चौंके। उन्हें गौर से देखा फिर उत्सुक होकर बोले, ''आप क्या चाहते हैं?''

चिरंजीलाल ने कहा, ''ध्यान से सुनिये; आप मुझे सात दिन के लिए राजा बना दें और राजा को साधारण नागरिक तो मैं उन्हें ठीक कर दूँगा। ठीक सातवें दिन मैं गद्दी से उतर जाऊँगा और राजा जी स्वस्थ होकर शासन सम्भाल लेंगे।''

प्रधानमंत्री पहले तो क्रोधित हो गये। मगर फिर सोचने लगे कि इसका मतलब क्या हो सकता है। चिरंजीलाल की दृढ़ता से प्रभावित भी हुए थे। आखिर उन्होंने पूरे मंत्रीमंडल की बैठक बुलाई और चिरंजीलाल के प्रस्ताव पर विचार किया।

अन्त में ये निर्णय लिया गया कि चिरंजीलाल सात दिन के लिए राजा बनाये जाएं और अगर वे राजा को ठीक न कर सकें तो उन्हें कठोर सजा मिले।

दूसरे दिन सुबह चिरंजीलाल का राज्याभिषेक हुआ। गाजे-बाजे के साथ। वे भरे दरबार में ससम्मान लाये गये और सिंहासन पर बैठे। बैठते ही उन्होंने आदेश दिया, ''पुराने राजा को हमारे सामने हाजिर किया जाये।''

राजा आया। उसे देखते ही चिरंजीलाल ने कड़ककर कहा, ''इसे महल से बाहर निकालो और पत्थर की खान में मजदूरों के साथ काम पर लगा दो। खबरदार! किसी ने भी इसको वहाँ से हटाने की कोशिश की तो उसको जान से हाथ धोना पड़ेगा।''

अपने असली राजा का यह अपमान देखकर अनेक सामन्तों ने तलवारें निकाल लीं परन्तु प्रधानमंत्री के इशारे पर वे संयत होकर बैठ गये।

आखिर चिरंजीलाल की ही चली। पुराने राजा को साधारण वस्त्र पहनने को मिले और उसे पत्थर की खान में पत्थर तोड़ने के काम पर रखवा दिया गया।

राजा को लगा जैसे घुटन से खुली हवा में आ गया हो। चिलचिलाती धूप में पत्थर तोड़ते-तोड़ते सहसा वह रोगी राजा बेहोश होकर लुढ़क गया।

कई मजदूर दौड़े आये। उसके मुँह पर पानी के छींटे मारे तो उसने आँखें खोलीं। उसे एक लोटे में पीने का पानी दिया गया। गट-गट करके वह पानी पी गया।

दोपहर को मजदूरों के खाने की छुट्टी हुई। सब अपना-अपना खाना खाने लगे। राजा एक पेड़ के नीचे लेटकर पसीना सुखाने लगा। कुछ देर बाद मजदूरों का ध्यान उस पर गया। उन्होंने उसे देखकर सोचा कि उसके पास खाना नहीं है। उन्होंने अपने खाने में से उसके लिए हिस्सा निकाला और उसे देने पहुँचे।

वह उनके अनुरोध को टाल नहीं सका। उठकर बैठ गया। उसके हाथ में मोटी-मोटी रोटियां थीं और उन पर रखा था प्याज। एक मिर्च भी थी। उसने रोटी का एक टुकड़ा प्याज के साथ खाया तो उसे लगा कि यही था वह स्वाद, जिसके लिए वह बरसों से भटक रहा था। उसने जी भर खाया फिर ठंडा मटके का पानी पिया।

वह राजमहल का राजसी ठाठ भूल गया। उसे यह भी याद नहीं रहा कि वह कभी राजा था। दिनभर लगकर काम करता। दो समय रूखी-सूखी रोटियां प्याज और हरी मिर्च से खाता। मटके का ठंडा पानी पीता और घोड़े बेचकर सोता।

इस तरह उसने सात दिन काटे और उसके चेहरे पर रौनक छा गई। वह मस्त हो गया था। रात को मजदूर लोग गाना-बजाना किया करते थे। राजा जो चिरंजीलाल के नाम से वहाँ पर काम करने लगा था, खूब नाचता-गाता था।

सात दिन बीत गये। चिरंजीलाल ने मुकुट उतारकर प्रधानमंत्री से कहा, ''जाइए, अब अपने राजा को ले आइए। वह ठीक हो गये हैं।''

प्रधानमंत्री को दूतों से पहले ही खबर मिल चुकी था। वह बेहद सन्तुष्ट थे। उन्होंने कहा, ''चलिए, हम सब उन्हें लाने के लिए एक साथ चलते हैं।''

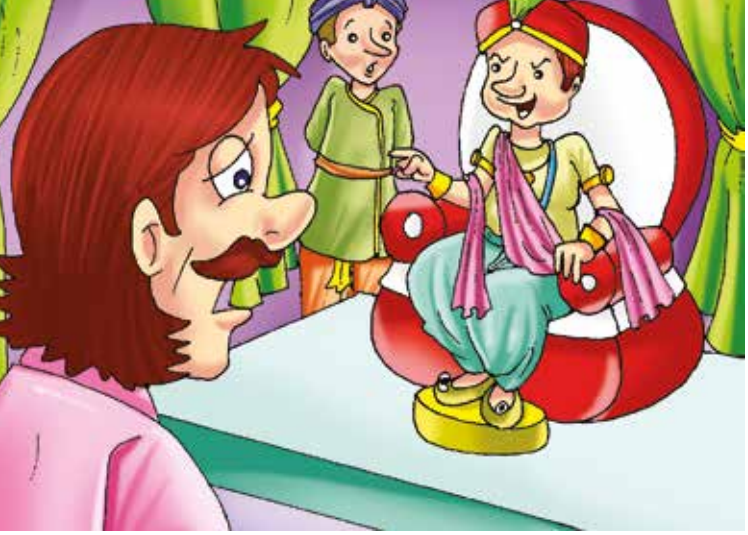

दल-बल सहित वे लोग पत्थर की खान तक पहुँचे। राजा वहाँ आराम से बैठा पत्थर तोड़ रहा था। मंत्रियों ने प्रणाम करके कहा, ''महाराज! अब आप स्वस्थ हो गये हैं। चलकर राजपाट सम्भालिए।''

राजा ने कहा, मैं यही ठीक हूँ। तुम लोग जाओ।''

सब लोग ताज्जुब में पड़ गये। प्रधानमंत्री ने बहुत समझाया, मगर राजा नहीं माना।

सब हार गये तो चिरंजीलाल ने राजा के सामने सिर टेककर कहा, ''महाराज! यह सब मेरे कहने पर किया गया था। मैं आपकी तकलीफ को समझ गया था इसलिए इलाज कर सका। मगर अब आप अपना राज्य सम्भालिए, नहीं तो सब व्यवस्था चौपट हो जायेगी।''

राजा ने कहा, ''मैं आपका बहुत आभारी हूँ। आपने मेरा सही इलाज किया। मगर अब मेरी बात मानिए। यह राज्य मैंने आपको दिया।''

चिरंजीलाल ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'महाराज, यह राजपाट आपको ही मुबारक! मुझे नहीं चाहिए। इन सात दिनों में आपकी भूख-प्यास लौट आयी। आप तो ठीक हो गये। अब आप लौट आइए और मुझे मुक्ति दीजिए। राजमहल में आरामदायक जिन्दगी जीने से मेरी तो रातों की नींद उड़ गयी है।''

बड़े मान-मनुहार के बार राजा लौटा। मगर यह सोचकर कि कोई मेहनत का काम हर रोज किया करेगा।

चिरंजीलाल को घोषित पुरस्कार मिला।

❖

आलेख : परशुराम शुक्ल

एक अद्भुत जलीय प्राणी

समुद्री घोड़ा

समुद्री घोड़ा विश्व में प्राय: सभी महासागरों में पाया जाता है। इसकी सौ से अधिक प्रजातियां हैं किन्तु भारत में केवल पांच प्रजातियां ही पाई जाती हैं। ये केवल गर्मियों के मौसम में ही दिखाई देता है, सर्दियां आरम्भ होते ही ये कहाँ अदृश्य हो जाते हैं? इस सम्बन्ध में जीव वैज्ञानिक अभी तक कोई पता नहीं लगा सके हैं।

समुद्री घोड़े की लम्बाई सिर से लेकर पूंछ तक 6 सेंटीमीटर से लेकर 17 सेंटीमीटर तक होती है तथा वजन पांच ग्राम से लेकर पच्चीस ग्राम तक होता है। इसकी त्वचा इस प्रकार की होती है कि यह जब चाहे गिरगिट की तरह अपना रंग बदल सकता है। इससे यह अपने शत्रुओं को धोखा देने में सफल हो जाता है। समुद्री घोड़े की पीठ पर एक पंख होता है, जिसकी सहायता से यह पानी में धीरे-धीरे तैरता है। तैरते समय इसका पंख इतनी तेजी से हिलता है कि दिखायी भी नहीं देता।

समुद्री घोड़े में बहुत-सी ऐसी विशेषताएं पाई जाती हैं जो किसी अन्य मछली में नहीं होती। इसका सिर शेष शरीर की सीध में न होकर शरीर के साथ नब्बे डिग्री का कोण बनाता हुआ होता है तथा यह पानी

में सीधा खड़ा होकर तैरता है। इसकी आँखों की संरचना भी सामान्य मछलियों से भिन्न होती है। यह अपनी आँखों से एक साथ ऊपर नीचे तथा दायें-बायें देख सकता है।

समुद्री घोड़े का प्रमुख भोजन अत्यन्त छोटे जलीय कीड़े-मकोड़े आदि हैं। यह अपना भोजन चबाता नहीं है बल्कि अग्रभाग में स्थित छोटे से मुँह में चूसकर खाता है। इसकी पतली और लम्बी पूंछ इसे तैरने में मदद करती ही है। इसकी सहायता से यह समुद्री घास, शैवालों, स्पन्जों आदि से चिपक कर आराम भी कर लेता है। समुद्री घोड़ा मछली परिवार का एक अद्‌भुत प्राणी है। इसका मुँह देखने में घोड़े जैसा लगता है। अतः इसे समुद्री घोड़ा कहते हैं।

यह विश्व का एकमात्र ऐसा जीव है जो बच्चे सेने का काम मादा नहीं अकेले ही नर समुद्री घोड़ा करता है। नर समुद्री घोड़े के पेट के पास एक भ्रूणदानी होती है जिसमें मादा अंडे देती है। नर समुद्री घोड़ा अपनी भ्रूणदानी में अंडे ग्रहण कर लेने के बाद अंडों को सेता है।

अंडों का विकास तथा शिशुओं का जन्म भ्रूणदानी में ही होता है। इस कार्य में लगभग पैंतालिस दिन का समय लगता है। अंडों में शिशु पनपते ही उसे प्रसव पीड़ा होने लगती है। अब वह अपनी मुड़ी हुई पूंछ की सहायता से किसी समुद्री वनस्पति से लिपट जाता है और अपने शरीर को आगे-पीछे हिलाता है। समुद्री घोड़े के आगे-पीछे होने से भ्रूणदानी का छोटा सा मुँह खुल जाता है और उससे एक-एक करके नवजात शिशु बाहर आ जाते हैं। यह क्रिया तब

तक चलती रहती है जब तक कि पूरी भ्रूणदानी खाली न हो जाए। सामान्यतया एक भ्रूणदानी में पचास अंडों को पोषण करने की क्षमता होती है।

समुद्री घोड़े के बच्चे जन्म के समय पूर्णतया पारदर्शी होते हैं तथा उनके भीतर के अंग बाहर से साफ दिखायी देते हैं। जैसे-जैसे इनका विकास होता है इनके ऊपर हड्डियों का एक कवच सा चढ़ता जाता है। इनके शरीर पर एक थैली होती है। इसकी सहायता से ये तैरने का प्रयास करते हैं। यह भी प्रकृति की अनुपम देन है। यह थैली बहुत संवेदनशील होती है यदि इससे हवा का एक भी बुलबुला बाहर निकल जाये तो इसका सन्तुलन बिगड़ जाता है और ये डूबकर सागर तल में जाकर बैठ जाते हैं।

समुद्री घोड़े के बच्चे सागर के जल का स्पर्श पाते ही तेजी से बढ़ते हैं और दो-तीन महीनों के भीतर पूर्णतया विकसित समुद्री घोड़े के रूप में आ जाते हैं।

❖

पढ़ो और हँसो

मच्छर का बच्चा पहली बार उड़ा। जब वापिस आया तो उसके पिता ने पूछा– कैसा लगा उड़ के?

बच्चा बोला– बहुत अच्छा। जिधर भी गया लोग तालियां बजा रहे थे।

बेटा : (पिता से) पिताजी, मुझे तीन विषयों में एक समान अंक मिले हैं।

पिता : बेटा, यह तो बड़ी अच्छी बात है। जरा हम भी तो सुने, हमारे बेटे ने एक समान कितने अंक प्राप्त किये हैं?

बेटा : पिताजी, शून्य, शून्य, शून्य।

डॉक्टर : (बुद्धूराम से) अब तबियत कैसी है?

बुद्धूराम : पहले से ज्यादा खराब है।

डॉक्टर : दवाई खा ली थी?

बूद्धूराम : नहीं, दवाई की शीशी भरी हुई थी।

डॉक्टर : मेरा मतलब है दवाई ली थी?

बूद्धूराम : जी, आपने दी और मैंने ली थी।

डॉक्टर : अरे भई! दवाई पी ली थी?

बूद्धूराम : नहीं दवाई तो लाल थी।

डॉक्टर : (खीझकर गुस्से से) दवाई को पी लिया था?

बूद्धूराम : नहीं पीलिया तो मुझे था।

एक नौजवान कमर में रस्सी बांधकर पहाड़ पर चढ़ने की ट्रेनिंग ले रहा था। तभी उसने अपने गाइड से पूछा– सर, रस्सी एकदम मजबूत है न। टूटेगी तो नहीं।

गाइड बोला– फिक्र मत करो, हमारे पास रस्सियों की कमी नहीं है।

पिता : (बेटे से) बेटा, तुम बाजार से गर्म मसाला क्यों नहीं लाये?

बेटा : दरअसल, पिताजी 'गर्म मसाला' को जैसे ही मैंने हाथ में लिया तो वह बिल्कुल ठंडा लगा इसलिए मैं उसे नहीं लाया।

अध्यापक : राजू बताओ, आज का पेपर आसान था या मुश्किल?

राजू : जी सर, पढ़ने में तो आसान था। पर करने में मुश्किल था।

सोनू : (माँ से) माँ मैं अपनी कक्षा में तृतीय स्थान पर आया हूँ।

माँ : (खुश होकर) अच्छा यह तो बताओ तुम्हारी कक्षा में कितने बच्चे थे?

सोनू : तीन। – किरण वालिया (पंचकूला)

अध्यापक : (छात्र से) बताओ स्वर और व्यंजन में क्या अन्तर है?

छात्र : सर, स्वर तो मुँह से बाहर निकालते हैं और व्यंजन मुँह के अन्दर जाते हैं।

नरेन्द्र आँखें बन्द करके शीशे के सामने खड़ा था। उसकी पत्नी ने पूछा– आप यह क्या कर रहे हो?

नरेन्द्र बोला– मैं देख रहा हूँ कि मैं सोता हुआ कैसा दिखता हूँ?

मास्टर जी : (सुमित से) फोर्ड क्या है?

सुमित : गाड़ी।

मास्टर जी : अच्छा बताओ, ऑक्सफोर्ड क्या है?

सुमित : जी, बैलगाड़ी।

बच्चा : पिताजी, यहाँ क्या हो रहा है और इतने सारे लोग क्यों दौड़ रहे हैं?

पिताजी: बेटे, यहाँ 'रेस' हो रही है। जीतने वाले को 'गोल्ड मेडल' मिलेगा।

बच्चा : अगर जीतने वाले को मिलेगा तो बाकी क्यों दौड़ रहे हैं?

डॉक्टर के बन्द क्लीनिक के सामने लम्बी लाईन लगी थी। एक आदमी बार-बार आगे क्लीनिक की तरफ जाने की कोशिश करता तो लोग उसे पकड़कर पीछे धकेल देते।

आखिर आदमी बोला– लगे रहो, लाईन में। मैं भी क्लीनिक नहीं खोलूँगा।

डॉक्टर : यह गोली पेटदर्द के लिए और यह सिरदर्द के लिए।

मरीज : पर डॉक्टर साहब! गोली तो पेट में ही जाएगी। फिर उसे पता कैसे चलेगा कि किसे कहाँ जाना है?

एक अध्यापक ने कक्षा के सभी विद्यार्थियों को क्रिकेट पर निबन्ध लिखने को कहा। सभी विद्यार्थी निबन्ध लिख रहे थे। सिवाय आलसी अंकित के।

अंकित ने पूरे निबन्ध को एक वाक्य में ही समेट लिया। उसने लिखा– बारिश की वजह से आज मैच रद्द हो गया है।

चिंटू को एक गधे ने लात मारी और झाड़ियों में छुप गया। तभी चिंटू ने एक जेब्रा देखा। देखते ही उसने जेब्रा को पीटना शुरू कर दिया।

किसी ने पूछा– चिंटू, तुम्हें लात तो गधे ने मारी थी और तुम बेचारे जेब्रा को क्यों पीट रहे हो?

चिंटू बोला– लो तुम भी खा गये न धोखा। अरे, यह वही गधा है। ट्रैक सूट पहनकर मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहा है।

– राकेश वलेचा (गोंदिया)

क्या आप जानते हैं? मछलियों का अद्भुत संसार

❖ तड़मासा नामक मछली की गति 100 कि.मी. प्रति घंटा होती है।

❖ कटलफिश नामक मछली का रक्त नीला तथा इसके तीन हृदय होते हैं।

❖ कटलफिश शत्रुओं से अपनी रक्षा करने के लिए पानी में अंधकार फैलाने वाली स्याही छोड़ती है।

❖ क्रिप्टोटेरस मछली का शरीर पारदर्शी होता है।

❖ टर्बोट नामक मछली की दोनों आंखें जन्म के समय एक ओर रहती हैं व बाद में एक आंख दूसरी ओर चली जाती है।

❖ शिम्प नामक मछली मनुष्य की तरह खड़े होकर चलती-फिरती है।

❖ डिट्रेमा मछली बच्चे पैदा करती है।

❖ मैक्सिको के पास पाई जाने वाली मादा तलवार मछली अंडे देने के बाद नर तलवार मछली में बदल जाती है।

❖ प्लेस नामक मछली एक बार में तीन लाख अंडे देती है।

❖ ब्लू व्हेल का शिशु 22 महीनों में 22 टन से भी अधिक वजन का हो जाता है।

❖ रे नामक मछली 350 वोल्ट तक की बिजली उत्पन्न कर सकती है।

❖ ब्लू व्हेल की लम्बाई 100 फुट व चौड़ाई 25 फुट होती है।

❖ समुद्री घोड़े के शिशु पारदर्शी होते हैं।

❖ स्क्विड लगभग 30 टन वजनी अस्थि रहित जीव है जो दैत्याकार व्हेल तक से टक्कर ले लेती है।

❖ बाओफिन नामक मादा मछली अंडे देने के बाद स्वयं उन्हें खा लेती है। इसलिए नर बाओफिन को उससे इन अंडों की रक्षा करनी पड़ती है।

❖ गरनर्ड मछली की छाती पर तीन अंगुलियों जैसे अंग होते हैं इनकी सहायता से यह समुद्र की कीचड़ भरी तली से भोजन खोदकर मुँह में डालती है।

❖ मैक्सिको की गुफा में पायी जाने वाली 'केव-चैरासिन' मछली के बचपन में तो आँखें होती हैं किन्तु वयस्क मछली हमेशा अंधी होती है।

प्रस्तुति : अरुण बंसल

पहेलियों के उत्तर :

1. अर्थशास्त्र, 2. राजतरंगिणी, 3. पंचतंत्र, 4. दीपक, 5. दीपावली, 6. मिठाई, 7. झालर, 8. पटाखा, 9. दीप-शिखा, 10. पुस्तक।

बाल कविता : अखिलेश आर्येन्दु

हो जब संकल्प महान

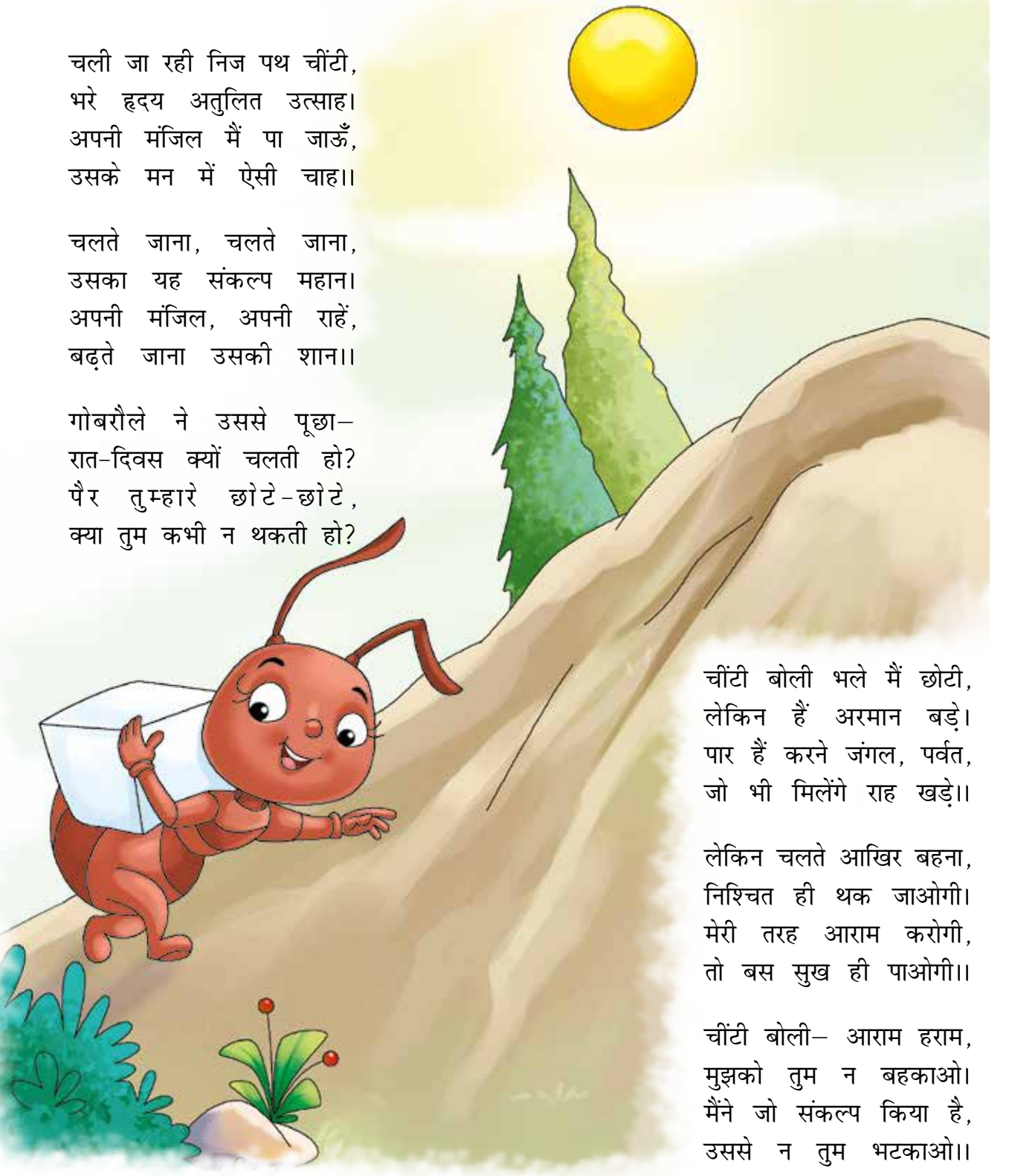

चली जा रही निज पथ चींटी,
भरे हृदय अतुलित उत्साह।
अपनी मंजिल मैं पा जाऊँ,
उसके मन में ऐसी चाह।।

चलते जाना, चलते जाना,
उसका यह संकल्प महान।
अपनी मंजिल, अपनी राहें,
बढ़ते जाना उसकी शान।।

गोबरौले ने उससे पूछा–
रात-दिवस क्यों चलती हो?
पैर तुम्हारे छोटे-छोटे,
क्या तुम कभी न थकती हो?

चींटी बोली भले मैं छोटी,
लेकिन हैं अरमान बड़े।
पार हैं करने जंगल, पर्वत,
जो भी मिलेंगे राह खड़े।।

लेकिन चलते आखिर बहना,
निश्चित ही थक जाओगी।
मेरी तरह आराम करोगी,
तो बस सुख ही पाओगी।।

चींटी बोली– आराम हराम,
मुझको तुम न बहकाओ।
मैंने जो संकल्प किया है,
उससे न तुम भटकाओ।।

अगस्त अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **प्रज्ञा साव** — 13 वर्ष
   सी-13/104, लोक सुरभि,
   चन्द्रमुखी, कल्याण (महाराष्ट्र)

2. **मानवी बंसल** — 13 वर्ष
   बंसल इंटरप्राइजेज, मेन बाजार,
   मंदिर चौक, लहरागागा,
   जिला : संगरूर (पंजाब)

3. **नक्श सेठी** — 10 वर्ष
   499, गली नं. 7, गुरु नानक नगरी,
   वार्ड नं. 27, मलोट,
   जिला : श्री मुक्तसर साहिब (पंजाब)

4. **आसमा** — 13 वर्ष
   गाँव : सराय रायचन्द,
   जिला : जौनपुर (उ.प्र.)

5. **आलिया प्रवीण** — 12 वर्ष
   गाँव व पोस्ट: उरैन,
   जिला : लखीसराय (बिहार)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

अवन्या (सेक्टर-4, रेवाड़ी),
अपराजिता (काशीराम नगर, मुरादाबाद),
रिद्धि सैनी (पालम कालोनी, नई दिल्ली),
कीर्ति (शाहबाद मारकंडा),
नम्रता सचदेवा (फरीदाबाद),
अक्षरा सिंह (प्रयागराज),
विधिता (द्वारका, दिल्ली),
आरव (बनूड़),
सबीर कुमार (पंजाला),
प्रवेश (रायपुर),
निशिका, ऋषि, जय, कबीर, विधि,
आंचल, मंथन, लहर, मुस्कान लालवानी,
मोहित, चिराग, यशिका पंजवानी, यशिका
देववानी, देवांग, लव, शिव, हार्दिक,
सुमित, मुस्कान रूपानी (गोधरा)।

नवम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **10 दिसम्बर** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया'**, निरंकारी कॉम्पलेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **फरवरी 2023 अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

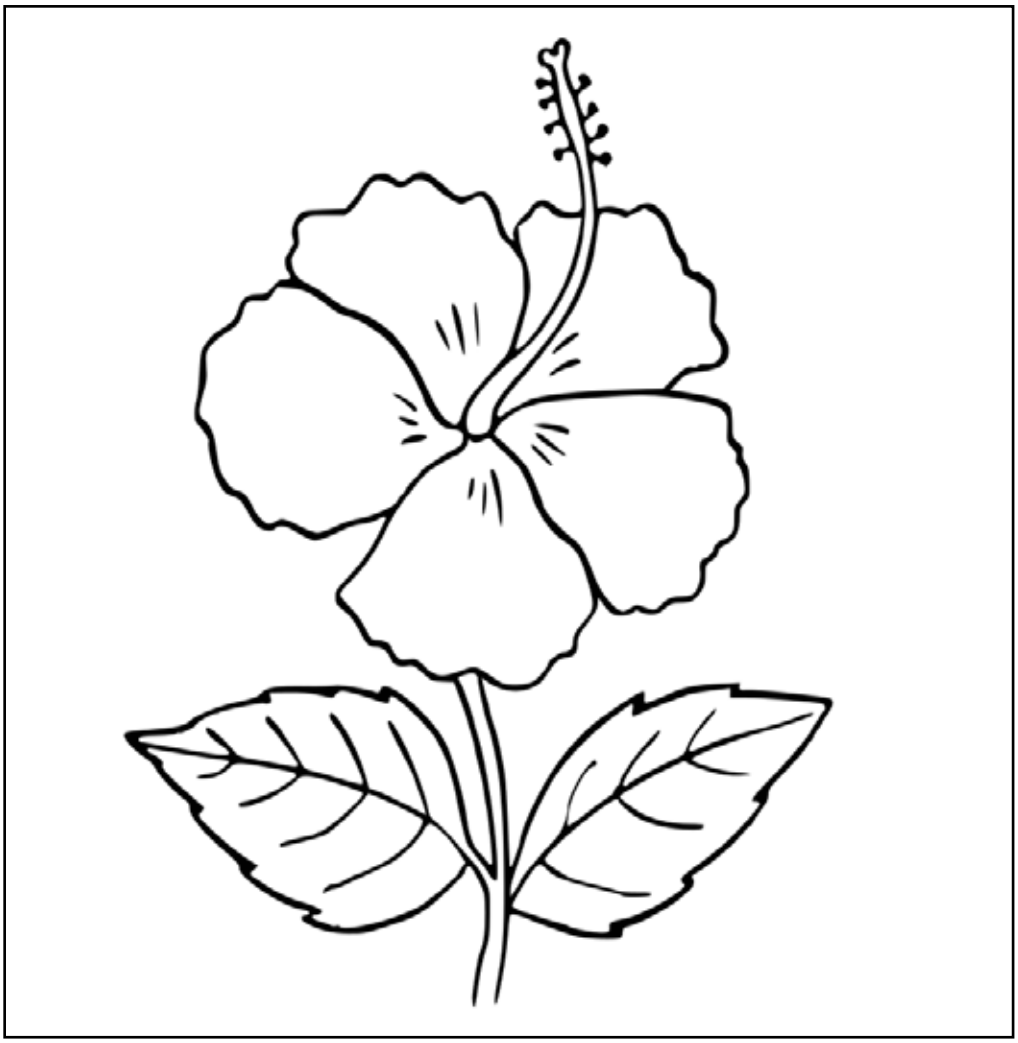

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। अगस्त अंक में कहानी 'ऐसे बंधी बिल्ली के गले की घंटी' (अमर सिंह शौल) पसन्द आई। हँसती दुनिया को बच्चे पढ़कर खुश हो जाते हैं। हँसती दुनिया पढ़कर बच्चों को ज्ञान प्राप्त होता है।

– पूरन सिंह सैनी (राजनगर, दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया मासिक का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। सितम्बर अंक भी सभी अंकों की तरह ही ज्ञानवर्द्धक व मनोरंजक था।

सभी कहानियां, कविताएं तथा लेख मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।

मुझे आशा है आने वाले अंक भी इतने ही ज्ञानवर्द्धक तथा मनोरंजक होंगे।

– आस्था विरमानी (त्रिनगर, दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया की सदस्य हूँ। मुझे हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। हँसती दुनिया वास्तव में सबको हँसाने का काम करती है। इसकी कहानियां शिक्षाप्रद होती हैं जो हमें ज्ञान देती हैं और हमें अच्छाई की राह पर चलना सिखाती है।

मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि यह पत्रिका दिन-दुगनी रात चौगुनी तरक्की करे।

– ऋचा गोयल (दिल्ली)

मेढक तरह-तरह के

बच्चों! आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मेढक के सींग भी होते हैं। सींग वाले मेढक अधिकतर ब्राजील में पाये जाते हैं। इसकी आँखों के ऊपर दो सींग होते हैं। यह अत्यन्त जहरीला होता है। इसकी आवाज भी कुत्ते के भौंकने की आवाज जैसी होती है। वहाँ की भाषा में इसे 'कुत्ता मेढक' भी कहते हैं।

इसी तरह अफ्रीका में पाये जाने वाले मेढक शत्रु से बचाव के बड़े ही अजीब तरीके अपनाता है। यहाँ के मेढक के पेट का रंग सुर्ख लाल होता है। शत्रु से छिपने के लिए यह उल्टा हो जाता है।

कुछ मेढक इतने छोटे होते हैं कि मक्खी जैसे लगते हैं। यदि पाँच मेढकों का वजन किया जाए तो कुल वजन एक ग्राम होता है। ऐसे मेढक क्यूबा में बहुतायत से पाए जाते हैं।

कई मेढकों का वजन लगभग सवा पौंड होता है। इसकी प्रजाति दक्षिण अमेरिका में पाई जाती है। यह आकार में सामान्य मेढक से दुगुना से तिगुना भी होता है।

मेढक की एक प्रजाति तो खासी बड़ी होती है। इसकी लम्बाई तीन साढ़े तीन फुट होती है और इनका वजन होता है 6 से 7 किलो तक। यह पश्चिमी अफ्रीका में पाया जाता है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

पत्र-पत्रिकाएं

सन्त निरंकारी

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सत्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

एक नज़र

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सत्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

हँसती दुनिया

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें : -

Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)
Email : patrika@nirankari.org

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड़, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सत्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।